mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-44 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

14 फरवरी 2025 शुक्रवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

गुकेश में देखने को... @ पेज 7

आचार्य सत्येंद्र दास को दी गई सरयू में 'जल समाधि'

भोपाल (एजेंसी)। अयोध्या में स्थित राम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य पुजारी महंत सत्येंद्र दास का बुधवार को निधन हो गया है। गुरुवार की शाम महंत सत्येंद्र दास को सरयु नदी में जल समाधि दी गई। उनके

● राम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य पुजारी महंत सत्येंद्र दास का निधन

शरीर को तुलसीदास घाट पर जल समाधि दी गयी है। इससे पहले सत्येंद्र दास के पार्थिव शरीर को रथ पर रखकर नगर भ्रमण कराया गया। इसके बाद उन्हें जल समाधि दी गई। आइए जानते हैं कि संतों को जल समाधि क्यों दी जाती है और उनका दाह संस्कार क्यों नहीं किया जाता।

क्या होती है जल समाधि?: दरअसल, सनातन धर्म में अंतिम संस्कार की अलग-अलग प्रक्रिया होती हैं। इनमें से एक है जब किसी साधु संत के पार्थिव शरीर को बिना अंतिम संस्कार के नदी में बहा दिया जाता है। इसे ही जल समाधि कहा जाता है। जल समाधि देने के समय शव के साथ भारी पत्थर बांधे जाते हैं। इसके बाद शव को नदी के बीच में प्रवाहित किया जाता है। इसके अलावा संतों को भू-समाधि भी दी जाती है। इसमें शव को पद्मासन या सिद्धिसन की मुद्रा में बिठाकर जमीन में दफना दिया जाता है।

क्यों दी जाती है जल समाधि?: भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म में प्राचीन काल से संतों को जल समाधि देने की परंपरा रही है। ऐसी मान्यताएं हैं कि जल पवित्र तत्व होता है और इसमें समाधि से जल्द ही मोक्ष मिलता है। माना जाता है कि मनुष्य का शरीर पंचतत्वों यानी- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना होता है। संतों के शव को जल में विलय कर दिया जाता है ताकि वह अपने मूल तत्व में लौट जाए। बता दें कि संतों शरीर आम मनुष्यों से काफी अलग माना जाता है। वह तप, साधना आदि परिपूर्ण होता है। इसलिए उनके शरीर का दाह संस्कार करने के बजाय उसे जल समाधि दी जाती है।

कौन थे आचार्य सत्येंद्र दास? : सत्येंद्र दास अयोध्या राम मंदिर के प्रमुख पुजारी थे। उन्होंने 20 वर्ष की आयु में ही संन्यास ग्रहण कर लिया था। वह निर्वाणी अखाड़े से आने वाले अयोध्या के सबसे प्रमुख संतों में से एक थे। 85 साल की उम्र में तीन फरवरी को उन्हें ब्रेन स्ट्रोक आया जिसके बाद उन्हें संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआई) में भर्ती कराया गया था। बुधवार को 85 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

संक्षिप्त समाचार

अमेरिका और इजरायल की धमकी के आगे झुका हमास

हमास (एजेंसी)। अमेरिका और इजरायल द्वारा सीजफायर समझौते को तोड़ने और गाजा में दोबारा हमले की चेतावनी के बाद हमास के सुर नरम पड़ गए हैं। हमास ने गुरुवार को योजना के अनुसार इजरायली बंधकों को रिहा करने की घोषणा की है। बता दें कि इससे पहले सोमवार को हमास ने गाजा

में राहत सामग्री नहीं पहुंचाने समेत कई अन्य आरोप लगाकर कहा था कि इजरायल समझौते का उल्लंघन कर रहा है और इस कारण वह शनिवार को होने वाली तीन और बंधकों की रिहाई टाल रहा है। हमास के इस कदम के बाद गाजा में सीजफायर खतरे में पड़ गया था। हमास ने गुरुवार को बंधकों की रिहाई से जुड़ा बयान जारी करते हुए कहा- ÷मिस्र और कतर के मध्यस्थों ने पुष्टि की है कि वे सभी बाधाओं को दूर करने के लिए काम करेंगे और संघर्ष विराम समझौता लागू होगा।÷ हमास के बयान में संकेत दिया गया है कि शनिवार को तीन और इजराइली बंधकों को रिहा किया जाएगा। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हमास द्वारा बंधकों को रिहा न किए जाने की स्थिति में गाजा में फिर से हमले शुरू करने की धमकी दी थी। नेतन्याहू ने देश की सेना को गाजा पट्टी और इसके आस-पास के क्षेत्रों में सैनिकों की तैनाती बढ़ाने का आदेश दे दिया था।

भीड़ में घुसी कार, 20 लोगों को कुचला, घायलों में बच्चे भी

जर्मनी (एजेंसी)। यूरोपियाई देश जर्मनी से एक दिल दहला देने वाली घटना की खबर सामने आ रही है। देश के प्रसिद्ध शहर म्युनिख में गुरुवार को एक कार भीड़ में घुस गई और लोगों को कुचल डाला। जानकारी के मुताबिक, इस घटना में कम से कम 20 लोग घायल हो गए हैं। घायलों में बच्चे भी

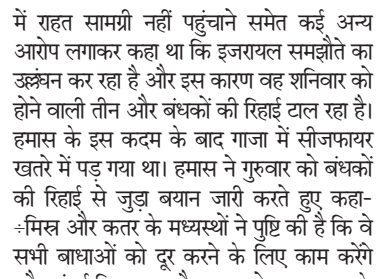

शामिल हैं। जर्मन पुलिस ने इस घटना के बारे में जानकारी दी है बताया है कि इस घटना में चालक 'बच गया है और अब उसे कोई खतरा नहीं है।क्के जर्मन अधिकारियों के हवाले से बताया है कि गुरुवार को म्यूनिख में एक ड्राइवर ने लोगों पर कार चढ़ा दी। इस हादसे में बच्चों समेत करीब 20 लोग घायल हो गए हैं। ये घटना सुबह 10ः30 बजे के करीब म्यूनिख शहर के पास एक चौराहे पर हुई थी। अब तक ये स्पष्ट नहीं हो सका है कि क्या ड्राइवर ने लोगों को जानबूझकर कार से टक्कर मारी थी या नहीं। पुलिस ने बताया है कि ड्राइवर घटनास्थल पर सुरक्षित है और अब उसे कोई खतरा नहीं है। घटना की जो तस्वीर सामने आई है उसमें जूतों सहित मलबे के साथ एक क्षतिग्रस्त कार देखी जा सकती है। पुलिस ने बताया है कि घटना में घायल हुए करीब 20 लोगों की देखभाल की जा रही है। इनमें से दो लोगों की हालत काफी गंभीर है। क्षेत्र के मेयर ने कहा है कि वह इस घटना से गहरे सदमे में हैं। उन्होंने बताया है कि घायलों में बच्चे भी शामिल हैं।क्के मुताबिक, जिस वक्त ये हादसा हुआ उस समय वहां सर्विस वर्कर्स यूनियन का प्रदर्शन हो रहा था। ये स्पष्ट नहीं हो पाया है कि घायलों में प्रदर्शनकारी भी शामिल हैं या नहीं।

हर्षवर्धन सपकाल बने महाराष्ट्र कांग्रेस के नए अध्यक्ष, नाना पटोले पर गिरी गाज

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी को बुरी तरह हार का सामना करना पड़ा है। महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले के नेतृत्व में महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव लड़ा गया, जिसमें कांग्रेस पार्टी को हार का सामना करना पड़ा। ऐसे में अब ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने एक बड़ा फैसला लिया है। दरअसल महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद से नाना पटोले को हटा दिया गया है और तत्काल प्रभाव से ये जिम्मेदारी हर्षवर्धन सपकाल को दे दी गई है। एआईसीसी द्वारा जारी लेटर के मुताबिक, हर्षवर्धन सपकाल को महाराष्ट्र कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। वहीं विजय नामदेवराव वडेट्टीवार को कांग्रेस विधायक दल का नेता नियुक्त किया गया है। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा जारी नोटिफिकेशन में लिखा गया, %कांग्रेस अध्यक्ष ने हर्षवर्धन सपकाल को तत्काल प्रभाव से महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष नियुक्त किया है। पार्टी निवर्तमान अध्यक्ष नाना पटोले के योगदान की सराहना करती है। कांग्रेस अध्यक्ष ने विजय नामदेवराव वडेट्टीवार को तत्काल प्रभाव से महाराष्ट्र में कांग्रेस विधायक दल के नेता के रूप में नियुक्त करने की भी मंजूरी दे दी है। बता दें कि कांग्रेस पार्टी के महासचिव केसी वेणुगोपाल द्वारा इस नोटिफिकेशन जारी किया गया है।% बता दें कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली बुरी हार के बाद यह पहला एक्शन लिया गया है, जिसमें नाना पटोले को साइड कर दिया गया है।

केंद्र सरकार ने दी जानकारी

ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन के 'मेगा-डैम' पर भारत की नजर

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन ने हाल ही में तिब्बत में भारत की सीमा के निकट ब्रह्मपुत्र नदी पर एक विशाल बांध बनाने का ऐलान किया है। चीन के इस कदम ने ब्रह्मपुत्र नदी के पामी को लेकर भारत में चिंता पैदा कर दी है। अब भारत सरकार ने कहा है कि वह ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन की मेगा बांध की योजना समेत अन्य डेवलपमेंट्स पर नजर रख रही है। केंद्रीय मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने गुरुवार को राज्यसभा में एक सवाल के जवाब में इस बात की जानकारी दी है।

केंद्रीय मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने एक लिखित उत्तर में कहा- ÷सरकार ब्रह्मपुत्र नदी से संबंधित सभी डेवलपमेंट्स की सावधानीपूर्वक निगरानी कर रही है। इसमें चीन द्वारा जलविद्युत परियोजनाएं विकसित करने की योजना भी शामिल है। सरकार राष्ट्र के हितों की रक्षा के लिए आवश्यक उपाय कर रही है।÷ उन्होंने बताया कि सीमा पार नदियों से संबंधित मुद्दों पर चीन के साथ 2006 में स्थापित

संस्थागत विशेषज्ञ-स्तरीय तंत्र और राजनयिक चैनलों के माध्यम से चर्चा की जाती है।

ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियों पर अध्ययन केंद्रीय मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने जानकारी दी है कि भारत ने सरकार ने चीनी अधिकारियों के सामने अपनी चिंताओं को लगातार जाहिर किया है। भारत ने चीन से इस बात को सुनिश्चित करने को कहा है कि नदी के ऊपरी इलाकों में किसी भी गतिविधि से निचले भाग के हितों को नुकसान न पहुंचे। केंद्रीय मंत्री ने बताया है कि ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में जलविद्युत परियोजनाओं के पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक प्रभावों को कम करने के लिए रणनीति तैयार करने के लिए पूर्वोत्तर भारत में ब्रह्मपुत्र की प्रमुख सहायक नदियों पर अध्ययन किया गया है।

चीन की ओर से तिब्बत के स्वायत्त क्षेत्र के मेडोग काउंटी में यारलुंग त्सांगपो (ब्रह्मपुत्र) नदी के ऊपरी भाग में 60,000 मेगावाट का मेगा डैम बनाया जा रहा है।

'शब्दों पर संयम रखें संजय राउत'

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की सियासत में उतार-चढ़ाव के बीच एनसीपी-एसपी के वरिष्ठ नेता जितेंद्र आव्हाड ने ठाणे में एक बड़ा बयान दिया। उनका यह बयान खासतौर पर उद्धव ठाकरे की शिवसेना और इंडिया ब्लॉक की राजनीति को लेकर था। उन्होंने महाराष्ट्र की राजनीति में चल रही 'बदले की राजनीति', 'द्वेष की भावना' और 'झूठे केसों में फंसाने की साजिश' पर तीखा हमला बोला। जितेंद्र आव्हाड ने कहा कि महाराष्ट्र में आज तक ऐसी राजनीति नहीं देखी गई थी, जिसमें किसी पर झूठे मामले लादकर उसे फंसाने का खेल चल रहा हो, यह सब खत्म होना चाहिए। वहीं, जितेंद्र आव्हाड ने दिल्ली और इंडिया गठबंधन की राजनीति पर भी एक बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा, ÷दिल्ली और गठबंधन की राजनीति शरद पवार के बिना नामुमकिन है। जितेंद्र आव्हाड ने शिवसेना नेता संजय राउत को भी अपने शब्दों की मर्यादा संभालने की सलाह दी। उन्होंने कहा, ÷संजय राउत को अपनी शब्दावली पर संयम रखना चाहिए।÷ साथ ही, शरद पवार की राजनीतिक समझदारी की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, ÷शरद पवार को यह अच्छी तरह पता है कि कब और क्या बोलना चाहिए। देश में आज तक जो किसी ने नहीं बोला, वो कहने वाले शरद पवार हैं।÷

दलाई लामा को खतरा? केंद्र सरकार ने बौद्ध धर्मगुरू को दी Z श्रेणी की सुरक्षा

सुरक्षा के लिए करीब 30 कमांडो की एक टीम शिफ्ट में काम करेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने तिब्बती आध्यात्मिक नेता और बौद्ध धर्मगुरू दलाई लामा की सुरक्षा बढ़ा दी है। जानकारी के मुताबिक, दलाई लामा को संभावित सुरक्षा खतरों के मद्देनज केंद्र सरकार ने जेड श्रेणी की सुरक्षा दी है। आधिकारिक सूत्रों ने गुरुवार को इस बारे में जानकारी दी है। आइए जानते हैं कि दलाई लामा को पहले कैसी सुरक्षा मिलती थी और इसमें अब क्या बदलाव होगा।

कैसी होगी दलाई लामा की नई सुरक्षा व्यवस्था? : गृह मंत्रालय ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की वीआईपी सिक्योरिटी ब्रांच को निर्देश दिया है कि वह 89 वर्षीय दलाई लामा की सुरक्षा का जिम्मा संभाले। सूत्रों के मुताबिक, अब दलाई लामा को देश के सभी हिस्सों में सीआरपीएफ कमांडो की जेड कैटेगरी की सुरक्षा प्रदान की जाएगी। दलाई लामा की सुरक्षा के लिए करीब 30 कमांडो की एक टीम अलग-अलग शिफ्ट में काम करेगी।

पहले कैसे मिलती थी सुरक्षा?: तिब्बती आध्यात्मिक नेता और बौद्ध धर्मगुरू दलाई लामा को

पहले हिमाचल प्रदेश की पुलिस की ओर से सुरक्षा मुहैया कराई जा रही थी। जब दलाई लामा दिल्ली या किसी अन्य स्थान पर जाते थे तो वहां पर स्थानीय पुलिस द्वारा उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा दी जाती थी। हालांकि, अब सुरक्षा व्यवस्था में बदलाव कर दिया गया है।

पारित हुआ तो सुप्रीम कोर्ट में देंगे चुनौती

वक्फ विधेयक पर मौलाना अरशद मदनी बोले- यह स्वीकार नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रमुख मुस्लिम संगठन जमीयत उलेमा-ए-हिंद के प्रमुख मौलाना अरशद मदनी ने वक्फ (संशोधन) विधेयक को असंवैधानिक और अलोकतांत्रिक करार देते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि मुस्लिम समुदाय इसे स्वीकार नहीं कर सकता। उन्होंने यह भी कहा कि संसद से इस विधेयक के पारित होने पर इसे उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी जाएगी। मदनी ने यह बयान उस वक्त दिया जब बृहस्पतिवार को वक्फ (संशोधन) विधेयक पर विचार करने वाली संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की रिपोर्ट को लोकसभा और राज्यसभा के पटल पर रखा गया। मुस्लिम संगठन की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार, मदनी ने कहा कि जो आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, वे सही साबित हुईं।

उन्होंने कहा, ÷इन संशोधनों के जरिए केंद्र सरकार वक्फ संपत्तियों की स्थिति और प्रकृति को बदलना चाहती है, ताकि उन पर कब्जा करना आसान हो जाए और उनका मुस्लिम वक्फ का दर्जा खत्म हो जाए।'' उनका कहना था, ''पहले के कानून की धारा

3 में वक्फ बोर्ड यह तय करता था कि कोई वक्फ वैध है या नहीं, अब मौजूदा संशोधन में यह अधिकार कलेक्टर को दे दिया गया है, लेकिन अब मौजूदा 14 संशोधनों में जो आज संसद में पेश किए गए हैं, एक नए संशोधन ने कलेक्टर से लेकर उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी को जांच का अधिकार दिया है जो यह तय करेगा कि यह संपत्ति सरकारी है या वक्फ की जमीन है।''

मौलाना मदनी ने कहा कि मुस्लिम समुदाय के विरोध के बाद वक्फ नियम में बदलाव किया गया। उन्होंने कहा, ''हम इस तानाशाही कानून को स्वीकार नहीं कर सकते।'' मदनी ने कहा कि ''धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दलों'' के पास अभी भी मौका है कि वे इस कानून को संसद में पारित होने से रोकें और इसका खुलकर विरोध करें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया, ''यदि यह कानून पारित हो जाता है तो जमीयत उलेमा-ए-हिंद इसके खिलाफ उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाएगी और साथ ही जमीयत उलेमा-ए-हिंद वक्फ संपत्तियों को बचाने के लिए मुसलमान और अन्य अल्पसंख्यकों और न्यायप्रिय लोगों के साथ मिलकर सभी लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकारों का भी उपयोग करेगी।''

अब सियासत में होगी नीतीश कुमार के बेटे की एंट्री?

जेडीयू नेताओं के बयानों ने मचाई हलचल

पटना (एजेंसी)। बिहार में इस साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और इस बीच एक नई सियासी सुगबुगाहट ने सूबे के राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है। इन दिनों जेडीयू सुप्रीमो और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार की सियासत में एंट्री को लेकर बातें होने लगी हैं। हालांकि अभी तक निशांत कुमार या नीतीश कुमार की तरफ से इस पर कुछ भी नहीं कहा गया है, लेकिन जेडीयू के 2 कद्दावर मंत्रियों ने इस बारे में बयान जारी कर चर्चाओं को बल दे दिया है।

जेडीयूके मंत्रियों की तरफ से आए ये बयान: निशांत कुमार के राजनीति में आने के सवाल पर जेडीयूके मंत्री अशोक चौधरी ने शेखपुरा में कहा, 'निर्णय तो निशांत जी को नहीं करना है। निर्णय तो निशांत जी के पिताजी करेंगे कि उनको लाना है कि नहीं लाना है। कोई पोलिटिकल

निर्णय तो है नहीं। ये तो माननीय नेता तय करेंगे।' वहीं, नीतीश के करीबी और जेडीयूमंत्री श्रवण कुमार ने कहा, 'यह फैसला मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी को लेना है। वह जो भी फैसला लेंगे हम लोग उस पर कायम रहेंगे, लेकिन उन्होंने आज तक अपने परिवार के लिए, राजनीति के लिए कोई भी कदम नहीं उठाया। इस मामले में नीतीश को ही अंतिम फैसला लेना है। हम लोगों से इस मामले में कोई बातचीत नहीं होती है। अगर कोई फैसला होता है तो हम लोग देखेंगे।'

बता दें कि निशांत आमतौर पर मीडिया से बात नहीं करते हैं और बीते कुछ महीनों में सिर्फ 2 बार वह कैमरे के सामने कुछ बोलते दिखे हैं। इनमें से एक बार वह एक दुकान के बाहर स्पीकर खरीदते हुए दिखे थे और दूसरी बार अभी हाल में 18 जनवरी को अपने पैतृक गांव में एक पारिवारिक कार्यक्रम में नजर आए थे। इन दोनों ही मौकों पर जब उनसे सियासत में एंट्री को लेकर सवाल पूछा गया तो उन्होंने इस पर कुछ भी साफ-साफ नहीं कहा। निशांत को इसके अलावा छठ के मौके पर पिता नीतीश कुमार के साथ अर्घ्य देते भी देखा जाता है।

आजम खान और उनके बेटे को बड़ी राहत, मशीन चोरी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने दी जमानत

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मशीन चोरी के एक मामले में उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री आजम खान और उनके बेटे अब्दुल्ला आजम खान को जमानत दे दी है। इस मामले में जमानत से इनकार करने के इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देते हुए उन्होंने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया था। जस्टिस एम.एम.सुंदरेश और जस्टिस राजेश बिंदल की पीठ ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस आदेश को खारिज कर दिया जिसमें

उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी गई थी। पीठ ने कहा, ''मामले के तथ्यों और परिस्थितियों जिसमें अपीलकर्ताओं द्वारा जेल में बिताई गई अवधि भी शामिल है, को ध्यान में रखते हुए हम आदेश को खारिज करने एवं अपीलकर्ताओं को जमानत देने के लिए तैयार हैं क्योंकि इस संबंध में आरोप पत्र पहले ही दाखिल किया जा चुका है।'' पीठ ने 10 फरवरी के अपने आदेश में कहा, ''इसलिए आदेश को रद्द किया जाता है और अपीलकर्ताओं को उन शर्तों व नियमों के अधीन जमानत प्रदान की जाती है, जो अधीनस्थ अदालत की संतुष्टि के अनुरूप हों।'' शीर्ष अदालत ने अधीनस्थ अदालत से अपीलकर्ताओं पर यह शर्त लगाने को कहा कि वे मुकदमे की कार्यवाही खत्म होने तक सहयोग करेंगे और गवाहों को प्रभावित करने या उन्हें अपने पक्ष में करने का कोई प्रयास नहीं करेंगे।

मुख्यमंत्री ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य को दी श्रद्धांजलि

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, श्री अयोध्या धाम के मुख्य पुजारी आचार्य श्री सत्येन्द्र कुमार दास महाराज के देवलोक गमन पर शोक प्रकट किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि परम रामभक्त का निधन अत्यंत दु:खद एवं आध्यात्मिक जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है, उनके मंगलकारी विचार और भक्तिमय व्यक्तित्व समस्त सनातन जगत को धर्म और मानव कल्याण के पथ पर चलने के लिए प्रेरित करते रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और शोक संतप्त शिष्यों और अनुयायियों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

भोपाल में भिक्षावृत्ति पूर्णत: प्रतिबंधित, उल्लंघन पर कानूनी कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 अंतर्गत धारा 163 में प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग में लाते हुए भोपाल जिले के समस्त राजस्व सीमा क्षेत्र में किसी भी प्रकार की भिक्षावृत्ति को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया है। भिक्षुओं को भिक्षा स्वरूप कुछ भी देना या उनसे किसी भी प्रकार के सामान को खरीदना प्रतिबंधित किया गया है। जो व्यक्ति भिक्षुओं को भिक्षा स्वरूप कोई चीज प्रदान करता है या देता है या इनसे कोई सामान खरीदता हैं तो उसके विरूद्ध भी इस आदेश के उल्लंघन के लिए कानूनी कार्यवाही की जाएगी। इसी क्रम में विगत दिवस बोर्ड ऑफिस चौराहें के ट्रैफिक सिग्नल पर वाहन चालकों को समान बेचने वाले भिखारी एवं ट्रक क्रमांक के चालक के खिलाफ धारा क्रमांक 173बीएनएस के तहत एफआईआर दर्ज की गई।

जेईई मेन्स-1 में आईईएस स्कूल का शानदार प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के आईईएस पब्लिक स्कूल के छात्रों ने जेईई मेन 2024 में शानदार प्रदर्शन कर स्कूल का नाम रोशन किया है। स्कूल के टॉपर शौर्य झावर ने 99.8 परसेंटाइल हासिल कर सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया। उनके बाद श्रेयांश अक्षित ने 99.4 परसेंटाइल और जतिन गौड़ ने 99.17 परसेंटाइल स्कोर किया। स्कूल के अन्य मेधावी छात्रों में भविष्य आचार्य ने 98.99 परसेंटाइल, राहुल आसवानी ने 98.6 परसेंटाइल और भाविन शाह ने 98.56 परसेंटाइल हासिल किया। इसके अलावा प्रतिष्ठा सेन ने 97.6 परसेंटाइल, रौनक राठौड़ ने 97.2 परसेंटाइल, पार्थ गावड़े ने 97.17 परसेंटाइल, आदित्य साहू ने 97 परसेंटाइल और शौर्य अग्रवाल ने 96.33 परसेंटाइल का स्कोर प्राप्त किया। इस उल्लेखनीय सफलता पर आईईएस पब्लिक स्कूल की चेयरपर्सन प्रोफेसर डॉ. सुनीता सिंह ने सभी सफल छात्रों को बधाई दी और आगामी जेईई एडवांस परीक्षा के लिए शुभकामनाएं दीं। स्कूल के छात्रों का यह प्रदर्शन पिछले वर्षों की तरह इस साल भी उत्कृष्ट रहा है।

कर्मचारी संगठनों की गेट मीटिंग, उठी पुरानी पेंशन की मांग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में कर्मचारी संगठनों की मांगों को लेकर आंदोलन तेज हो गया है। बुधवार को लोक शिक्षण संचालनालय गौतम नगर में अधिकारी कर्मचारी संयुक्त मोर्चा और पेंशनर्स की महत्वपूर्ण गेट मीटिंग आयोजित की गई। बैठक में पुरानी पेंशन बहाली, 2016 से लंबित पदोन्नति, स्वास्थ्य बीमा योजना और 45,000 अस्थाई कर्मियों को नियमित करने जैसी प्रमुख मांगों पर चर्चा हुई। संगठन ने आकस्मिक कार्यभार वाले कर्मचारियों को 300 दिन का कैजुअल सिलेंडर और स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ देने की मांग भी रखी। बैठक में कर्मचारी नेताओं ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से 16 फरवरी को स्वर्ण जयंती आंबेडकर पार्क भोपाल में होने वाले बड़े प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की। इस प्रदर्शन में प्रदेश के सभी जिला, संभाग, तहसील और ब्लॉक स्तर के कर्मचारी शामिल होंगे। बैठक को एमपी द्विवेदी (अध्यक्ष, अधिकारी कर्मचारी पेंशनर्स संयुक्त मोर्चा), जितेंद्र सिंह (महामंत्री, राज्य कर्मचारी संघ), अजय श्रीवास्तव नीलू (प्रांत अध्यक्ष), अशोक बेन (संभागीय महासचिव) और एलएन कैलासिया (पेंशनर्स संघ) समेत कई वरिष्ठ पदाधिकारियों ने संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन सतीश सोमकुंवर ने किया, जबकि सुरेश बाथम ने आभार व्यक्त किया।

उप मुख्यमंत्री के साथ राजपत्रित अधिकारी संघ की बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में राजपत्रित अधिकारी संघ के पदाधिकारियों ने उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा से मुलाकात की। बैठक में अधिकारियों और कर्मचारियों से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई। राजपत्रित अधिकारी संघ के प्रांताध्यक्ष अशोक शर्मा ने पॉलिसी, प्रमोशन और पेंशन (पीपीपी) मॉडल से संबंधित लगभग 52 सूत्रीय मांगें रखीं। प्रमुख मांगों में शिक्षकों के विभिन्न संवर्गों में प्रथम नियुक्ति दिनांक से वरिष्ठता की गणना, 2016 से रुके हुए प्रमोशन को पुरानी तिथि से लागू करना और पुरानी पेंशन योजना की बहाली शामिल हैं।

अनेकता में एकता ही हमारे देश की विशेषता है-खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने गुरूवार को भोपाल स्थित आईकफ आश्रम, शाहपुरा में आयोजित अंतर्राज्यीय युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम 2024-25 के समापन अवसर पर हिमाचल प्रदेश से आए युवा प्रतिभागियों से संवाद किया और उनके अनुभव जाने। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि भारत विविधताओं से संपन्न देश है, लेकिन इसकी सबसे बड़ी विशेषता अनेकता में एकता है।

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से अन्य राज्य के युवाओं को एक-दूसरे की संस्कृति, परंपराओं, भाषा और जीवनशैली को समझने का अवसर मिला है, जिससे राष्ट्रीय एकता और सद्भाव को मजबूती मिलेगी। मंत्री श्री सारंग ने सभी प्रतिभागियों को अपने अनुभवों को अपने राज्य में साझा करने और राष्ट्रीय एकता के संदेश को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में विधायक श्री अमर सिंह यादव, नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक श्री राकेश सिंह तोमर और भोपाल की जिला युवा अधिकारी श्रीमती निक्की राठौर भी उपस्थित थीं। मंत्री श्री सारंग ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत-2047 के संकल्प को दोहराते हुए युवाओं को प्रेरित किया कि वे नए भारत के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति ही देश के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है और यदि युवा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लें, तो भारत को आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने का सपना जल्द ही साकार होगा। उन्होंने युवाओं से नवाचार, तकनीक, स्वच्छता, योग, स्वास्थ्य और सामाजिक समरसता को अपनाने की अपील की, जिससे वे

देश के विकास में अपना सार्थक योगदान दे सकें। मंत्री श्री सारंग के विचारों से प्रेरित होकर हिमाचल प्रदेश से आये युवा बहुत हर्षित दिखे। युवाओं ने मंत्री श्री सारंग को हिमाचल प्रदेश आने और स्वयं के घर रुकने का न्यौता भी दिया। मंत्री श्री सारंग को हिमाचली लोक-नृत्य 'नाटी' का प्रदर्शन कर अपने नृत्य में शामिल किया। हर्षित मन से मंत्री श्री सारंग को अपने साथ थिरकते हुए देख सभी अभिभूत हुए। पांच दिवसीय अंतर्राज्यीय युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के नाह (सिरमौर), धर्मशाला (कांगड़ा), ऊना, हमीरपुर और बिलासपुर जिलों से आए 25 युवा प्रतिभागी एवं 2 एस्कॉर्ट ने भाग लिया। इस दौरान उन्होंने भीमबेटका, बिरला मंदिर, शौर्य स्मारक, आदिवासी संग्रहालय और भोपाल के तालाबों का भ्रमण कर मध्यप्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक

मानव संग्रहालय में इन्वेस्टर्स समिट का विरोध

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राजधानी भोपाल के मानव संग्रहालय में 24-25 जनवरी को होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट की जगह को लेकर विरोध शुरू हो गया है। कांग्रेस ने इस समिट के लिए मानव संग्रहालय में पेड़ काटे जाने और आम लोगों का प्रवेश बंद करने का आरोप लगाया है। वहीं समाजवादी पार्टी ने ईको सेंसेटिव जोन में इन्वेस्टर्स समिट जैसे आयोजन को लेकर सवाल उठाए हैं। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मनोज यादव ने कहा, सरकार यह बताए कि मानव संग्रहालय में जहां इन्वेस्टर मीट होने वाली है, क्या वाइल्डलाइफ अथॉरिटी, वन विभाग इसकी परमिशन देता है? सोचिए जहां इतनी भीड़ होगी तो वहां जो वन्य प्राणी रहते हैं, उनके बीच में इस मीट की कैसे परमिशन दी जा रही है? अगर केंद्र में आपकी सरकार है तो क्या सारे नियम कानून शिथिल हो गए हैं? मानव संग्रहालय में जहां इन्वेस्टर्स मीट हो रही है पहले सरकार वन विभाग की परमिशन दिखाएं। इस ईको सेंसेटिव जोन में आखिर इस भीड़भाड वाले आयोजन की परमिशन कैसे दी गई? पूर्व मंत्री पीसी शर्मा ने इन्वेस्टर्स समिट के आयोजन को लेकर मीडिया से कहा, ये उसी तरह से भोपाल को सजा रहे हैं, जैसे किसी के घर में कोई लड़की या लड़का देखने आए तो घर की लीपा-पोती की जाती है।दुकानों से बहुत सी चीजें लाकर सजा दिया जाता है। वही स्थिति हो रही है। कर्ज लेकर दिखावा करने के लिए करोड़ों खर्च हो रहे हैं फिर इसी कर्ज का ब्याज चुकाने के लिए कर्ज लेना पड़ेगा। पीसी शर्मा ने कहा, भोपाल में भेल इलाकों की सड़कों की हालत खराब है। मैं समझता हूं, जैसे मुख्य सड़कों पर काम हो रहे हैं, वैसे ही पूरे भोपाल में काम होना चाहिए। पिछले बीस सालों से हम इन्वेस्टर्स मीट देख रहे हैं लेकिन, इन्वेस्टमेंट नहीं आया।इसीलिए आज मप्र के लाखों इंजीनियर, डॉक्टर सहित पढ़े-लिखे युवा बेरोजगार हैं। अगर ऑरिजनल वाली से स्थिति इन्वेस्टर्स ने देख ली तो उनकी जेब से पैसा नहीं निकलेगा और इन्वेस्टमेंट नहीं आएगा।

राज्य शिखर सम्मान का अलंकरण समारोह आज

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा कला, संस्कृति एवं साहित्य के क्षेत्र में प्रदान किए जाने वाले राज्य स्तरीय राज्य शिखर सम्मान का अलंकरण समारोह आज, 13 फरवरी को शाम 6:30 बजे भारत भवन, भोपाल में आयोजित किया जाएगा। इस समारोह में नौ विधाओं में 15 प्रतिष्ठित विभूतियों को सम्मानित किया जाएगा। राज्य शिखर सम्मान के अंतर्गत सम्मानित व्यक्तियों को सम्मान पट्टिका और दो लाख रुपए की सम्मान राशि प्रदान की जाएगी। यह समारोह प्रदेश की कला, संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले प्रतिभाशाली व्यक्तियों को मान्यता देने के लिए आयोजित किया जाता है। डॉ. उर्मिला शिरीष की कहानियों एवं उपन्यासों का उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी, बांग्ला, कन्नड़, सिंधी, मराठी, मलयालम, मैथिली और उड़िया जैसी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। डॉ. उर्मिला शिरीष के कहानी संग्रहों के साथ-साथ उपन्यास की भी प्रशंसा सर्वव्यापी रही है, प्रकाशित उपन्यासों में खैरियत है हुजूर, कोई एक सपना और चाँद गवाह जैसे उपन्यासों ने आम लोगों के जीवन के हर पहलुओं को रेखांकित किया है। डॉ. उर्मिला शिरीष का साहित्यिक योगदान न केवल हिंदी साहित्य में, बल्कि अन्य भाषाओं में भी व्यापक रूप से रहा है, आपके लेखन में गहरी संवेदनशीलता और समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने की क्षमता है। उन्होंने साहित्य में बी.ए. एवं एम.ए. की उपाधि प्राप्त की हैं, साथ ही हिंदी, अंग्रेजी, अरबी, फारसी और संस्कृत का भी विशेष अध्ययन किया है। उन्होंने विभिन्न संस्थानों में अपनी सेवाएं दी हैं, नगर निगम उपायुक्त, के.बी.एन. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उज्जैन में प्राचार्य, कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन में लेखा अधिकारी एवं महादेव क्लब, उज्जैन में प्रबन्धक आदि शामिल हैं।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में डेढ़ घंटे रहेंगे पीएम मोदी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में 24-25 फरवरी को होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (त्द्धुस) का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे। पीएम समिट स्थल मानव संग्रहालय में सुबह 10 से 11.30 बजे तक रहेंगे। शेड्यूल के मुताबिक, पीएम 23 फरवरी की रात में भोपाल आ सकते हैं। वे राजभवन में रुकेंगे। प्रधानमंत्री मोदी और सीएम डॉ. मोहन यादव देश-विदेश के शीर्ष उद्योगपतियों के साथ राजभवन में डिनर भी करेंगे। समापन पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आएंगे। समिट के लिए देश के दो बड़े उद्योगपति गौतम अदाणी और कुमार मंगलम बिड़ला की सहमति मिल गई है जबकि मुकेश अंबानी भी आएंगे। उनकी मौखिक सहमति मिली है। समिट के लिए अब तक 20 हजार से ज्यादा रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं।

अब तक के प्लान के मुताबिक, प्रधानमंत्री मोदी मुख्य डोम में रहेंगे। डोम की कैपेसिटी 3000 लोगों की है। मंच पर सिर्फ पोडियम रहेगा, जहां अतिथि स्पीच देकर लौट जाएंगे। ठीक सामने 60 वीवीआईपी कुर्सियां लगाई जाएंगी। यहां प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, अदाणी, अंबानी, बिड़ला समेत देश के शीर्ष बड़े उद्योगपति, केंद्रीय मंत्री, डिप्टी सीएम, संबंधित विभागों के मंत्री, सांसद, विधायक आदि रहेंगे। डोम में 40 से ज्यादा बड़ी स्क्रीन लगेंगी ताकि पीएम और अन्य अतिथियों को आखिरी छोर तक बैठे उद्योगपति सुन सकें। देश के शीर्ष उद्योगपति गौतम अदाणी और कुमार मंगलम बिड़ला के आने की सहमति एमपी स्टेट इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन को मिल गई है। कंपनी के अधिकारियों ने भी समिट को लेकर रजिस्ट्रेशन कराया है। अफसरों की मानें तो बिड़ला ग्रुप की सारी कंपनियों के एमडी के रजिस्ट्रेशन भी हुए हैं।

शीर्ष उद्योगपतियों के लिए 5 स्टार दो प्रमुख होटल्स में बुकिंग की गई है। एमपी टूरिज्म ने इन कमरों को ब्लॉक किया था, जबकि बुकिंग उद्योगपति ही कर रहे हैं। यहां प्रेसिडेटिंयल सुइट, लग्जरी सुइट, एक्जीक्यूटिव सुइट, डीलक्स लेक व्यू, लग्जरी, डीलक्स रूम, कोटयार्ड सुइट, क्लब रूम, जूनियर सुइट और विंटर ग्रीन जैसे रूम हैं। इनका एक दिन का किराया 12 हजार से 1 लाख रुपए तक है। 2, 3 और 4 स्टार होटल्स में भी 1600 से 4 हजार रुपए प्रतिदिन तक के कमरे बुक हैं।

मंत्री सारंग अपेक्स बैंक से करेंगे स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता अभियान की शुरुआत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग के निर्देश पर अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के अवसर पर सहकारिता के महत्व के प्रति लोगों को जागरूकता लाने के लिये विभाग के तहत सभी स्तर के विभागीय कार्यालय, सहकारी संस्थाओं में स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता अभियान के तहत स्वच्छता दिवस कार्यक्रम मनाया जायेगा। मंत्री श्री सारंग सुबह 11 बजे अपेक्स बैंक, भोपाल से स्वच्छता अभियान की शुरुआत करेंगे।

निर्देशानुसार प्रदेश की सभी शीर्ष संस्थाओं के प्रबंध संचालक, संभाग/जिला के संयुक्त/उप/सहायक आयुक्त सहकारिता और जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को भी कहा गया है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभाग एवं संस्थाओं में कार्यालयीन नस्तियों को व्यवस्थित करना, पुराने रिकार्ड के बस्तों में संदर्भ अंकित होना, कार्यालय में इंडेक्स रजिस्टर का संधारण जिसकी मदद से पूर्ण परिसमापन, वैधानिक कार्यवाही, स्थापना आदि के विगत 10 वर्षों के विवरण तत्काल ज्ञात किये जा सकें, जैसे काम हों। साथ ही शौचालयों की सफाई एवं कार्यालयीन कक्षों में रोशनी एवं साज-सज्जा की जायें।

विभाग एवं संस्थाओं के अधिकारी-कर्मचारी जिला कार्यालय में एकत्रित हों। उसके बाद अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष पर विशेष साफ-सफाई आयोजन के बैनर के साथ एक रैली निर्धारित स्थल जिला सहकारी बैंक, अन्य सार्वजनिक स्थल अथवा किसी संस्था कार्यालय तक सहकारिता एवं स्वच्छता विषयक नारे लगाते हुये निकाली जायें।

कैबिनेट में छूट के बाद विभागों में अधिकारियों के ट्रांसफर,एक दर्जन जनपद सीईओ के बाद अब 31 तहसीलदार-नायब तहसीलदार के तबादले

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जनवरी में तबादला नीति में संशोधन के साथ दी गई छूट के बाद राज्य शासन के अलग-अलग विभागों में अधिकारियों के तबादले शुरू हो गए हैं। दो दिन पहले पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग ने जनपद पंचायतों के 12 मुख्य कार्यपालन अधिकारियों (सीईओ) के तबादले किए थे। गुरुवार को राजस्व विभाग ने 31 तहसीलदार, प्रभारी तहसीलदार, नायब तहसीलदार और प्रभारी नायब तहसीलदार के ट्रांसफर किए हैं। प्रशासकीय और स्वयं के व्यय पर इन तहसीलदारों और प्रभारी तहसीलदारों के ट्रांसफर किए गए हैं। लिस्ट में प्रदीप तिवारी बैतूल से जबलपुर, लीना जैन रतलाम से निवाड़ी, सुनील शर्मा सागर से रायसेन,

अंबर पंथी रायसेन से सागर, राकेश खजूरिया नर्मदापुरम से शाजापुर, नवीन भारद्वाज श्योपुर से मुरैना तथा कुलदीप कुमार दुबे श्योपुर से मुरैना शामिल हैं।

इसी तरह लक्ष्मण प्रसाद पटेल को शहडोल से रीवा, रामकिशोर झरबड़े को हरदा से नर्मदापुरम, मनीष पांडे को बड़वानी से उज्जैन, विजय तलवारे को देवास से धार, दिनेश कुमार सोनी को उज्जैन से बड़वानी, आलोक श्रीवास्तव को शाजापुर से अशोकनगर, कैलाश कुर्मी को पन्ना से सागर, रमेश कोल को सिंगरौली से छतरपुर, अलका एक्का को नर्मदापुरम से बैतूल तथा दीपक कुमार शुक्ला का ट्रांसफर अशोकनगर से भिंड किया गया है।

नायब तहसीलदार और प्रभारी नायब तहसीलदारों की सूची में विजय कुमार चौधरी को सागर से छतरपुर, प्रतीक रजक को छतरपुर से सागर, पूजा भोरहरी को छतरपुर से जबलपुर, कैलाशचंद्र मालवीय को शिवपुरी से अशोकनगर, बृजेश कुमार शर्मा को शिवपुरी से ग्वालियर, संतोष धाकड़ को शिवपुरी से भिंड, प्रदीप कुमार केन को भिंड से शाजापुर स्थानांतरित किया गया है। इसी तरह नायब तहसीलदार और प्रभारी नायब तहसीलदारों में संगम पटले को सागर से मंडला, नागेश पंवार को शाजापुर से विदिशा, नीतू बागरी को हरदा से जबलपुर, सौरभ मरावी को मऊगंज से सिवनी, निधि तिवारी को छिंदवाड़ा से भोपाल, शशांक जैन को भिंड से छतरपुर, सतेंद्र तिवारी को विदिशा से राजगढ़ पदस्थ किया गया है।

पांच माह बाद डॉ सीतासरन शर्मा की जगह नए सभापति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पूर्व वित्त मंत्री और दमोह विधायक जयंत मलैया अब विधायकों के शिष्टाचार और सम्मान अनुरक्षण संबंधी समिति के सभापति होंगे। विधायक मलैया को विधानसभा सचिवालय द्वारा जारी नामांकित सदस्यों और सभापतियों की सूची में सभापति बनाया गया है। इसके पहले इस समिति के सभापति पूर्व विधानसभा अध्यक्ष और इटारसी विधायक डॉ. सीतासरन शर्मा थे जिन्होंने समिति से इस्तीफा दे दिया था। विधानसभा सचिवालय के अनुसार विधानसभा की वर्ष 2024-25 की अवधि में सेवा करने के लिए गठित सदस्यों के शिष्टाचार एवं सम्मान अनुरक्षण समिति में सभापति का पद रिक्त था। इस रिक्त स्थान पर विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने जयंत

मलैया विधायक को नामांकित करने का निर्णय लिया है।

इसलिए विधानसभा प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियम 180 के उपनियम (1) के अधीन मलैया को सभापति नियुक्त किया गया है। सभापति का यह पद 12 सितम्बर 2024 को पूर्व सभापति डॉ सीतासरन शर्मा द्वारा इस्तीफा दिए जाने के कारण रिक्त था।

सदस्यों के शिष्टाचार और सम्मान अनुरक्षण समिति में सभापति को नामांकित किए जाने के बाद अब समिति में जयंत मलैया सभापति होंगे। जबकि विधायक रमेश मेंदोला, अनिल जैन निवाड़ी, शरद जुगलाल कोल, राजकुमार कर्राहे, प्रताप ग्रेवाल और भंवर सिंह शेखावत सदस्य के रूप में काम करेंगे।

गौरतलब है कि इसके अलावा विधानसभा की याचिका और अभ्यावेदन समिति के सभापति हरदीप सिंह डंग, नियम समिति के सभापति मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, प्रत्यायुक्त विधान समिति के सभापति संजय पाठक, शासकीय आश्वासनों संबंधी समिति के सभापति हरिशंकर खटीक, पुस्तकालय, अनुसंधान और संदर्भ समिति के सभापति ओमपकाश सखलेचा, आचरण समिति के सभापति सरेंद्र पटवा, पटल पर रखे गए पत्रों का परीक्षण करने संबंधी समिति के सभापति ओमप्रकाश धुर्वे, प्रश्न और संदर्भ समिति के सभापति बृजेंद्र प्रताप सिंह, कृषि विकास समिति के सभापति दिलीप सिंह परिहार तथा महिला और बाल कल्याण समिति के सभापति अर्चना चिटनिस हैं।

दो ऑटो की आपस में टक्कर, हादसे में 2 महिलाओं समेत 6 यात्री घायल, अस्पताल में भर्ती

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले के चुरहट विधानसभा क्षेत्र के साडा गांव में गुरुवार शाम करीब 4 बजे दो ऑटो रिक्शा की आमने-सामने की टक्कर में 6 लोग घायल हो गए। घायलों में 2 महिलाएं और 4 पुरुष शामिल हैं। घायलों को एम्बुलेंस की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। जहां पर सभी की हालत स्थिर है। पुलिस दुर्घटना के बारे में पता लगा रही है।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, एक ऑटो चुरहट से मवई की तरफ जा रही थी और दूसरी मवई से चुरहट की ओर आ रही थी। क्रॉसिंग के दौरान दोनों वाहनों की जोरदार टक्कर हो गई, जिससे ऑटो पलट गई। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। चुरहट पुलिस ने मौके पर पहुंचकर 108 एम्बुलेंस की मदद से सभी घायलों को चुरहट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया।

डॉक्टरों के अनुसार, सभी घायलों की हालत स्थिर है और उनका इलाज जारी है। हादसे में घायल हुए यात्रियों में प्रयागराज की अल्का पाण्डेय (40), ग्राम साड़ा की माया बंसल (40), दुअरा के सुखेंद्र सिंह (59), डढ़िया के जितेंद्र सिंह, बघेड़ा के गिरीश तिवारी (36) और भितरी रामपुर नैकिन के रन्नु यादव (45) शामिल हैं।

13.65 किलो गांजे के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

चुरहट पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले की चुरहट पुलिस ने गुरुवार दोपहर मुखबिर की सूचना पर भमरहा गांव में छापेमारी कर 13.65 किलोग्राम गांजा जब्त किया और दो तस्करों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान रमेश तिवारी और रंजीत उर्फ छोट्टन तिवारी के रूप में हुई है। दोनों आरोपी लंबे समय से गांजे की तस्करी कर रहे थे। पुलिस ने दोनों के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस अब इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश में जुटी है।

छत्तीसगढ़ से कुंभ जा रही बोलेरो पलटी, 6 घायल

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। बिलासपुर से प्रयागराज कुंभ नहाने के लिए जा रहे 6 युवकों की बोलेरो गुरुवार सुबह 5 बजे सोहागपुर थाने के सामने बेकाबू होकर गड्ढे में पलट गई। हादसे में सभी युवक मामूली रूप से घायल हुए। नाइट ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों ने तत्काल मौके पर पहुंचकर उलटी पड़ी बोलेरो से युवकों को बाहर निकाला और मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया। प्राथमिक उपचार के बाद सभी को छुट्टी दे दी गई। थाना प्रभारी भूपेंद्र मणि पांडे के अनुसार, घटनास्थल पर ओवरब्रिज का निर्माण चल रहा है।

ज्वेलर्स की दुकान में चोरी का प्रयास

ग्राहक बनकर आए शहडोल के बदमाश, ग्राणीणों ने पकड़ा, दो गिरफ्तार, एक फरार

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले के सेमरिया बाजार में गुरुवार को बदमाशों ने चोरी की वारदात को अंजाम देने का प्रयास किया। मामला चुरहट थाना क्षेत्र स्थित अनुराधा ज्वेलर्स का है। ज्वेलर्स की दुकान में 3 बदमाश ग्राहक बनकर पहुंचे, जिनमें से दो को दुकानदारों और ग्रामीणों ने पकड़ लिया। जबकि एक भाग गया। पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी है।

दरअसल, अनुराधा ज्वेलर्स की दुकान पर एक बदमाश ने चांदी का चंद्रमा खरीदा, जबकि दूसरा दुकानदार से सोने के गहने दिखाने की जिद करने लगा। तीसरा बदमाश दुकान के बाहर निगरानी कर रहा था। उनकी एक काली होंडा बाइक भी स्टार्ट हालत में खड़ी थी। बदमाशों ने दुकानदार को बातों में उलझाकर चोरी का प्रयास किया, लेकिन दुकान में मौजूद लोगों को उनकी हरकतें संदिग्ध लगीं। जब एक बदमाश ने चोरी का प्रयास किया, तब दुकानदार ने उसे पकड़ लिया। एक बदमाश भागने में सफल रहा, लेकिन ग्रामीणों ने घेराबंदी कर उसे भी धर दबोचा। स्थानीय लोगों ने दोनों आरोपियों को रस्सी से बांधकर हल्की पिटाई की और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने दोनों को हिरासत में ले लिया।

जांच में सामने आया कि पकड़े गए बदमाश शहडोल जिले के रहने वाले हैं। इस घटना के बाद व्यापारियों और स्थानीय लोगों ने पुलिस से बाजार में सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने की मांग की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और फरार बदमाश की तलाश जारी है।

धनपुरी और बुढार में पीलिया के मरीज बढ़े

5 से 15 साल के 50 से ज्यादा बच्चे 1 सप्ताह में संक्रमित, पानी की जांच कर रहा पीएचई विभाग

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। मध्य प्रदेश के कोयलांचल क्षेत्र शहडोल में पीलिया का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है। पिछले एक माह से मरीजों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है, जिसमें सबसे ज्यादा चिंताजनक स्थिति यह है कि 5 से 15 वर्ष के बच्चे इसकी चपेट में आ रहे हैं। धनपुरी के सरकारी अस्पताल के आंकड़ों के अनुसार, केवल एक सप्ताह में पीलिया के 50 से अधिक मामले सामने आए हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने तत्काल जांच के आदेश जारी किए हैं। अस्पताल प्रबंधन की रिपोर्ट के मुताबिक, बच्चों में पीलिया का संक्रमण तेजी से फैल रहा है और प्रतिदिन नए मरीज सामने आ रहे हैं।

क्षेत्र में पीलिया के बढ़ते मामलों ने स्थानीय प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मचा दिया है। स्थानीय निवासियों में भी इस बीमारी को लेकर दहशत का माहौल है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा की जा रही जांच से यह पता लगाया जाएगा कि इतनी बड़ी संख्या में बच्चे इस बीमारी की चपेट में क्यों आ रहे हैं और इसके प्रसार को कैसे रोका जा सकता है।

सबसे ज्यादा बच्चे प्रभावित: सरकारी आंकड़ों के अनुसार, धनपुरी और बुढार क्षेत्र में पीलिया तेजी से फैल रहा है और सबसे ज्यादा छोटे बच्चे इसकी चपेट में आ रहे हैं। बच्चों में बढ़ते मामलों को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग भी सतर्क हो गया है। धनपुरी क्षेत्र में इस संक्रमण का सबसे अधिक प्रभाव देखा गया है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र धनपुरी में सबसे ज्यादा बच्चे पीलिया से ग्रसित होकर उपचार के लिए भर्ती किए गए हैं।

हर दिन तेजी से बढ़ रहे मरीज: कोयलांचल क्षेत्र बुढार और धनपुरी में हर दिन पीलिया के मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। सरकारी अस्पतालों में प्रतिदिन 8-10 नए मरीज जॉन्डिस से ग्रसित होकर पहुंच रहे हैं। सरकारी अस्पताल प्रबंधन इन मरीजों को लेकर अलर्ट मोड में आ गया है। अस्पताल में भर्ती मरीजों के पते और बीमारी के संभावित कारणों की जांच की जा रही है।

निजी अस्पतालों में भी मरीजों की संख्या बढ़ी: जहां एक ओर सरकारी अस्पतालों में पीलिया के मरीजों की संख्या बढ़ रही है, वहीं निजी अस्पतालों और क्लीनिकों में भी ऐसे मरीजों की भीड़ देखी जा रही है। प्राइवेट पैथोलॉजी लैब में भी जॉन्डिस के टेस्ट करवाने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। हालांकि, निजी अस्पतालों में पहुंचने वाले मरीजों

घटिया सड़क बनाने वाली संस्कार इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनी ब्लैकलिस्ट

2 दिन में उखड़ी 2 करोड़ की सड़क, सब इंजीनियर निलंबित

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में घटिया रोड निर्माण करने वाले सब-इंजीनियर को निलंबित कर दिया गया है, इसके साथ ही निर्माण एजेंसी को भी ब्लैकलिस्ट किया गया है। दरअसल, झमटुली से पुतरयान तक बनी ढाई किलोमीटर लंबी सड़क बनने के महज दो दिन बाद उखड़ गई।

1 करोड़ 81 लाख रुपए की लागत से बनी इस सड़क की घटिया गुणवत्ता का खुलासा तब हुआ, जब ग्रामीणों ने अपने हाथों से सड़क का डामर उखाड़कर वीडियो बनाया और सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया।

संस्कार इन्फ्रास्ट्रक्चर ने किया है सड़क निर्माण: वीडियो सामने आने के बाद जिला प्रशासन ने तत्काल जांच के आदेश दिए। जांच में सड़क की गुणवत्ता मानकों के अनुरूप नहीं पाई गई। सड़क का निर्माण संस्कार इन्फ्रास्ट्रक्चर छतरपुर ने किया है। सड़क पर लगे बोर्ड के अनुसार काम 8 महीने पहले पूरा होना दिखाया गया है, जबकि निर्माण कार्य दो दिन पहले ही पूरा हुआ था।

पीडब्ल्यूडी विभाग और ठेकेदार की मिलीभगत-ग्रामीण: सागर के चीफ इंजीनियर सीपी सिंह ने सब-इंजीनियर संजय त्यागी को निलंबित करने के साथ-साथ रोड बनाने वाली एजेंसी को ब्लैकलिस्ट कर दिया है। स्थानीय विधायक राजेश शुक्ला ने भी मामले की गंभीरता को स्वीकार किया और बताया कि उन्होंने संबंधित अधिकारियों से इस विषय में बात की थी। ग्रामीणों का आरोप है कि पीडब्ल्यूडी विभाग और ठेकेदार की मिलीभगत से यह घोटाला हुआ है।

दो अलग-अलग चोरी का खुलासा

मोबाइल दुकान और मंदिर से चोरी के मामले में 3 आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल पुलिस ने गुरुवार को दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में हुई चोरी की वारदातों का खुलासा किया है। जैतपुर और खैरहा थाना क्षेत्र में हुई चोरी के मामलों में 3 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

जैतपुर थाना क्षेत्र के शाहपुर में मोबाइल दुकान की चोरी के मामले में दो आरोपी पकड़े गए हैं। विजय कुमार जायसवाल की शिकायत पर पुलिस ने खाम्हीडोल निवासी अशोक कुमार सेन उर्फ बब्लू और सुरेंद्र सिंह कंवर को गिरफ्तार किया। आरोपियों ने दुकान की पिछली दीवार तोड़कर दो मोबाइल फोन और 15 हजार की चोरी की थी। पुलिस ने आरोपियों से दो मोबाइल और 6,500 रुपए बरामद किए हैं।

खैरहा थाना क्षेत्र के करकटी गांव में स्थित गुग्घा देवी मंदिर से हुई चोरी के मामले में पुलिस ने अंबेडकर नगर बुढ़ार निवासी 24 वर्षीय रंजीत पटेल को गिरफ्तार किया है। गेंदलाल बैगा की शिकायत पर दर्ज मामले में आरोपी ने मंदिर से देवी के चांदी का मुकुट, सोने की नथुनी और फुलिया चुराई थी। मुखबिर की सूचना पर पकड़े गए आरोपी से पुलिस ने लगभग 5,500 रुपए कीमत का चोरी किया गया सामान बरामद कर लिया है।

पांच दिवसीय दिव्यांगजनों के लिए रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राजरानी सेवा संस्थान के प्रशिक्षकों एवं विशेषज्ञों ने दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग भारत सरकार द्वारा अहमदाबाद (गुजरात) में आयोजित पांच दिवसीय दिव्यांगजनों के लिए रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम में सफलतापूर्वक प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त कर संस्थान का नाम किया रोशन।

राजरानी सेवा एवं शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षकों ने दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर अहमदाबाद गुजरात में आयोजित दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कौशल परिषद द्वारा आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेकर प्रशिक्षक प्रमाण पत्र प्राप्त किया सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम इनेबल इंडिया के द्वारा भारत सरकार के विभिन्न राज्यों से आए 30 प्रशिक्षकों को दिव्यांगजनों के लिए रोजगार कौशल (एंप्लॉय एबिलिटी स्किल पीडब्ल्यूडी) का प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार की दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कौशल परिषद की केंद्रीय स्तर के विशेषज्ञों की टीम द्वारा परीक्षा ,प्रायोगिक परीक्षा, एवं मौखिक परीक्षा के आधार पर सफलतापूर्वक सभी परीक्षाओं में सफल प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

भारत सरकार द्वारा विशेषज्ञों की टीम में प्रशिक्षक दिनेश कुमार दिनेश, रूपा, ज्योति, शिबू, एवं क्षेत्रीय पुनर्वास केंद्र अहमदाबाद के विशेषज्ञ, सामाजिक न्याय एवं दिव्यांग जनशक्तिकरण विभाग के प्रशिक्षक एवं विशेषज्ञ के साथ-साथ भारत सरकार की अन्य प्रशिक्षकों एवं विशेषज्ञों द्वारा पांच दिवसीय राष्ट्रीय स्तर के दिव्यांग जनों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के रोजगार आधारित कौशलों का विधिवत प्रशिक्षण विशेषज्ञों द्वारा सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक एवं विभिन्न प्रत्यक्ष गतिविधियों द्वारा उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

राजरानी सेवा संस्थान द्वारा भी पीएम दक्ष योजना के अंतर्गत संचालित दिव्यांग जनों के कौशल प्रशिक्षण हेतु सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग भारत सरकार द्वारा संचालित पीएम दक्ष योजना का संचालन किया जा रहा है जिस हेतु राजरानी सेवा संस्थान को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार एवं दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कौशल परिषद की केंद्रीय स्तर द्वारा पीएम दक्ष योजना के अंतर्गत अनुमति प्रदान की गई है संस्था द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को व्यवस्थित ढंग से संचालन हेतु तीन प्रशिक्षकों संजय सिंह, अनीता विश्वकर्मा, दीप्ति सिंह परिहार को प्रशिक्षण हेतु क्षेत्रीय पुनर्वास संस्थान सीआरसी अहमदाबाद में प्रशिक्षण हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी स्तरों पर आयोजित परीक्षाओं में सफलतापूर्वक सफलता प्राप्त करके प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्राप्त किया और अब दिव्यांग जनों को प्रशिक्षक, विशेषज्ञ के रूप में दिव्यांग जनों को स्वावलंबी रोजगार परक एवं आत्मनिर्भर बनाने हेतु उन्हें विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षण प्रदान करके दिव्यांग जनों को समाज की मुख्य धारा एवं आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे।

राजरानी सेवा संस्थान के प्रशिक्षकों एवं विशेषज्ञों के इस उत्कृष्ट कार्य के लिए सामाजिक न्याय विभाग ,राजरानी सेवा संस्थान के प्रबंध कार्यकारिणी समिति के सदस्यों तथा संस्थान में कार्यरत कर्मचारीगण एवं विभिन्न समाजसेवियों द्वारा सभी प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षकों को सफलतापूर्वक सभी परीक्षाओं को पास करने और प्रमाण पत्र प्राप्त करने तथा राजरानी सेवा संस्थान का नाम राष्ट्रीय स्तर पर उज्जवल एवं रोशन करने हेतु हार्दिक बधाइयां एवं शुभकामनाएं दी गई।

जलवायु अनुकूल पंचायतों की क्षमता वृद्धि के लिए कार्यशाला आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला पंचायत के सहयोग से मझौली के जनपद प्रज्ञा सभागृह में जनपद पंचायत मझौली और रामपुर नैकिन की 20 ग्राम पंचायतों का एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में सरपंच, सचिव और सहायक इंजीनियरों को डब्लूआरआई इंडिया और टीआरआई के सहयोग से महात्मा गांधी नरेगा के तहत किए जा सकने वाले कार्यों पर चर्चा की गई।

इसके बाद डब्लूआरआई इंडिया की सहयोगी संस्था आईएलआरटी ने जलवायु अनुकूल पंचायतों की क्षमता वृद्धि पर प्रकाश डाला। साथ ही महुआ, कटहल और बांस जैसी वन उपजों को वैल्यू चेन मार्केट लिंकेज से जोड़कर ग्रामीणों की आजीविका कैसे बढ़ाई जा सकती है और भूदृश्य बहाली में योगदान कर सके और पंचायतों को जलवायु अनुकूल बनाया जा सके इस पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

इस कार्यशाला में मझौली जनपद के कार्यक्रम अधिकारी अरविंद तिवारी, ग्रामीण आजीविका मिशन के ब्लॉक कार्यक्रम प्रबंधक चंद्रकांत सिंह ने कहा कि ग्राम पंचायत की कार्य योजना में महुआ, कटहल और बांस के पौधों को अपने पौधा रोपण में शामिल किया जाए। डब्लूआरआई इंडिया से सीनियर प्रोग्राम एसोसिएट मैनेजर ज्योति यादव, टीआरआई से संकेत और आईएलआरटी संस्था से प्रोग्राम मैनेजर हिमांशु भारद्वाज, संजय शर्मा, राकेश साहू और राजीव जायसवाल एवं उनकी टीम उपस्थित रहे।

शासकीय महाविद्यालय मड़वास में "बाल विवाह प्रतिषेध" पर संगोष्ठी का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। म.प्र.शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार एवं सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुपालन में शासकीय महाविद्यालय मड़वास में बाल विवाह प्रतिषेध से सम्बंधित कार्यक्रम का आयोजन किया गया । महाविद्यालय की बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा कुमारी अंजली पांडेय एवं बी.एस. सी.द्वितीय वर्ष की छात्रा प्रिया द्विवेदी को महाविद्यालय का ब्रांड एम्बेसडर बनाया गया। इसी तारतम्य में 10 फरवरी को महाविद्यालय में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन डॉ. ज्योति रजक के संयोजकत्व में किया गया । पोस्टर प्रतियोगिता में पाँच। छात्राओं ने भाग लिया जिसमे प्रथम स्थान पर कुमारी अश्विनी साकेत रही द्वितीय स्थान पर कुमारी रूबी साहू तृतीय स्थान पर कुमारी चंचल सेन रही । इसी तरह 11 फरवरी को डॉ. निशा सिंह के संयोजकत्व में निबंध प्रतियोगिता का

आयोजन किया गया । निबंध प्रतियोगिता में छः छात्र/छात्राओं ने भाग लिया जिसमे प्रथम स्थान पर कुमारी रूबी साहू रही द्वितीय स्थान पर चंचल सेन तृतीय स्थान पर कुमारी शीलू शुक्ला रही । कार्यक्रम की अगली कड़ी में महाविद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम डॉ. सौरभी गुप्ता के नेतृत्व में चलाया गया।

बालविवाह प्रतिषेध एवं बाल अधिकार विषय पर 13 फरवरी अपरान्ह 2 बजे से महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आई प्रजापति जी उपस्थित थे। इस अवसर प्राचार्य ने कहा कि बाल विवाह एक सामाजिक कलंक है और इस कलंक को हम सामूहिक प्रयास से ही खत्म कर सकते है। सह वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. लक्ष्मीकांत कुशवाहा ने कुप्रथा के दोषों के बारे में बताया तो डॉ. पूजा गर्ग ने कच्ची मिट्टी का उदाहरण दे कर अपनी बात रखी। वही डॉ अमिता खरे ने बालविवाह प्रतिषेध एवं। उसके दुष्परिणाम पर बात कही।

कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी की संयोजिका डॉ. आकांक्षा मिश्रा ने किया । आभार प्रदर्शन डॉ. दीपक अग्निहोत्री ने किया । कार्यक्रम में डॉ संगीता मिश्रा डॉ कमलेश जायसवाल डॉ पंकज मिश्रा डॉ रामधारी जायसवाल डॉ अनुराग तिवारी प्रो.प्रवीण कुमार साकेत डॉ संध्या वर्मा डॉ. राजेश कुमार पटेल डॉ सुरेंद्र गुप्ता प्रो.बाबा हरिनन्द अनिल केवट सहित महाविद्यालय के छात्र/छात्राएं उपस्थित थे।

जल का संरक्षण ही जल समस्या का निदान है : जिला समन्वयक

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद विकासखंड रामपुर नैकिन जिला सीधी के तत्वाधान में ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति इटहा एवं नवांकुर संस्था स्वामी विवेकानंद ग्राम विकास समिति के प्रयास से विकासखंड रामपुर नैकिन के लिए चयनित नियोनार नदी पर जल संरक्षण अभियान के अंतर्गत बोरी बंधान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ग्रामीण जन एवं प्रस्फुटन समितियां के अध्यक्ष सचिव तथा मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक शिवदत्त उरमलिया एवं विकासखंड समन्वयक अनिल पाठक की महिती भूमिका रही। ज्ञात हो ग्राम इटहा को मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा आदर्श ग्राम की परिकल्पना पर काम करने हेतु चयनित किया है। विगत दो महीना से इस गांव में आदर्श ग्राम के लिए सर्वे तथा ग्राम प्रोफाइल पर कार्य किया जा रहा था। आज से जल संरक्षण अभियान से शुरुआत करके क्रमशः नशा मुक्ति ग्राम शत प्रतिशत साक्षरता ग्राम आदि पर कार्य करते हुए आदर्श ग्राम बनाने का कार्य करना प्रस्तावित किया गया है।

निक्षय मित्र बनकर 200 टी बी मरीजों को गोद लिया

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में 100 दिवसीय निक्षय शिविर के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड की इकाई सीधी सीमेंट वर्क्स के सीएसआर विभाग यूनिट हेड बीपी सग्गू तथा एफएचएचआर डॉ योगेश द्विवेदी के सहयोग द्वारा निक्षय मित्र बनकर 200 टीबी मरीजों को गोद लिया गया।

इस कार्यक्रम में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, जिला पंचायत सीईओ अंशुमन राज के नेतृत्व में मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ बबिता खरे एवं जिला क्षय अधिकारी डॉ हिमेश पाठक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निक्षय मित्र द्वारा फूड बास्केट वितरण किया गया और टीबी मरीजों को पोषण आहार वितरित किया गया।

डॉ हिमेश पाठक ने टीबी के बारे में जागरूक किया और बताया कि टीबी से कैसे बचा जाए एवं टीबी के क्या लक्षण हैं। उन्होंने बताया कि टीबी के लक्षणों में चलने में सांस भर आना, काफी दिनों से खांसी, लगातार खांसी, भूख नहीं लगना, वजन कम होना, रात को पसीना आना और रात्रि में बुखार आना शामिल है। उन्होंने बताया कि अगर खंखार में पॉजिटिव आते हैं तो 6 माह तक दवाई लेना अनिवार्य है और दवाई में कोई गैप नहीं करना चाहिए।

विचार

ऐसे किया जाता है विकास

हमारे पड़ोसी देश चीन ने पिछले सप्ताह एक बार फिर से सुर्खियां बनाईं। इस बार भारत में घुसपैठ नहीं बल्कि भारत और दुनिया भर के लिए एक उदाहरण बना। चीन ने अपने नवाचार द्वारा एक रेगिस्तान को न सिर्फ रोका बल्कि उसे हरा-भरा भी कर दिया। चीन का यह विकास कार्य आज काफी चर्चा में है। 'मौत का सागर' के रूप में जाना जाने वाला टकलामकन रेगिस्तान 337,600 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसका आकार लगभग पश्चिमी देश जर्मनी के बराबर का क्षेत्र है। इसके विशाल रेत के टीलों और बार-बार आने वाले रेतीले तूफानों ने लंबे समय तक मौसम के पैटर्न को बाधित किया है।

कृषि को खतरे में डाला है और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। जवाब में, चीन ने एक व्यापक हरित अवरोध लागू किया है, जिसे रेगिस्तान के किनारों को लॉक करने और इसके नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को स्थिर करने के लिए डिजाइन किया गया है।इन प्रयासों ने न केवल रेलवे और राजमार्गों जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की रक्षा की है, बल्कि यह भी प्रदर्शित किया है कि टिकाऊ प्रौद्योगिकियां मरुस्थलीकरण का प्रतिकार कैसे कर सकती हैं। सौर ऊर्जा से संचालित सिंचाई प्रणालियों को एकीकृत करके, चीन पृथ्वी पर सबसे कठिन वातावरणों में से एक में वनस्पति को बनाए रखने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग कर रहा है। टकलामकन रेगिस्तान की इस व्यापक पहल पर 4 दशकों से काम चलाया गया। ग्रीनबैल्ट का पहला 2,761 किलोमीटर का काम कई वर्षों में पूरा हुआ, अंतिम चरण नवंबर 2022 में शुरू हुआ, जिसमें रेगिस्तानी चिनार, लाल विलो और सैक्सौल पेड़ों जैसी लचीली, रेगिस्तान-अनुकूल प्रजातियों को रोपने के लिए 600,000 श्रमिकों को एक साथ लाया गया- जो शुष्क परिस्थितियों में जीवित रहने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते हैं।

ये पौधे कई उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं- वे खिसकती रेत को सहारा देते हैं, रेगिस्तान के विस्तार को धीमा करते हैं और स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं। यह परियोजना इतिहास में सबसे महत्वाकांक्षी पुनर्वनीकरण प्रयासों में से एक का प्रतिनिधित्व करती है, जो दुनिया भर में भूमि क्षरण से निपटने के लिए एक नई मिसाल कायम करती है। उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में ग्रीनबैल्ट का प्राथमिक लक्ष्य मरुस्थलीकरण को रोकना है यह परियोजना दीर्घकालिक आर्थिक अवसर भी पैदा कर रही है। कुछ नए लगाए गए पेड़, जैसे कि रेगिस्तानी जलकुंभी, में औषधीय गुण होते हैं, जो संभावित रूप से हर्बल चिकित्सा के लिए आकर्षक बाजार खोलते हैं।

आसान जिंदगी चाह ने बेइज्जती से डिपोर्ट होने किया मजबूर

योगेंद्र योगी

बहुत बे-आबरू हो कर तिरे कूचे से हम निकले...गालिब के इस शेर से उन डिपोर्ट किए गए भारतीयों का दर्द समझा जा सकता है, जिन्हें अमरीका से भारत वापस भेजा गया है। अमेरिका से निर्वासित किए गए 100 से ज्यादा भारतीय प्रवासियों को लेकर अमेरिकी सैन्य विमान सी-17 ग्लोबमास्टर से वापस भारत भेजा गया है। इनमें 104 भारतीय शामिल हैं। जिसमें 72 पुरुष, 19 महिलाएं और 13 बच्चे हैं। अमरीका में करीब 18 हजार प्रवासी भारतीय अवैध रूप से रह रहे हैं। इन्हें भी वापस भारत भेजा जाएगा। डंकी मार कर अमरीका तक पहुंचे प्रवासी भारतीयों का काफी कुछ लुट गया। इनके लाखों रुपए बर्बाद हो गए और अमरीका बसने के सपने भी टूट गए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फ़ोन पर बातचीत में डोनाल्ड ट्रंप ने अवैध आप्रवासन का मुद्दा उठाया था। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फ़ोन पर बातचीत के दौरान अमेरिका में रह रहे अवैध भारतीय आप्रवासियों को लेकर चिंता जताई थी। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि हमें उम्मीद है कि बिना दस्तावेज़ के अमेरिका में रह रहे भारतीयों के संबंध में जो सही होगा भारत वो क़दम उठाएगा। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा था कि भारत अवैध प्रवासन का समर्थन कतई नहीं करता। अवैध प्रवासन कई अवैध गतिविधियों से जुड़ा रहता है। ये हमारी प्रतिष्ठा के लिए ठीक नहीं है। जयशंकर ने कहा था कि अगर हमारा कोई नागरिक अमेरिका में अवैध रूप से रहता हुआ पाया जाता है और उसका भारत का नागरिक होना पाया जाता है तो हम उसके क़ानूनी रूप से भारत वापस लाने की प्रक्रिया के लिए तैयार हैं। बीते कुछ दिनों से अमेरिका दुनिया भर के देशों से आए और अमेरिका में रह रहे अवैध प्रवासियों को उनके देश भेजने की कार्रवाई कर रहा है। इस कार्रवाई को अंजाम देने वाले हैं, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सबसे कठोर आप्रवासन नीति के मास्टरमाइंड स्टीफन मिलर। ट्रंप ने अपना दूसरा कार्यकाल जिस दिन संभाला, उसी दिन उन्होंने जिन कार्यकारी आदेशों पर हस्ताक्षर किए उन पर मिलर के हस्ताक्षर पहले से मौजूद थे। इन आदेशों में थे- जन्मसिद्ध नागरिकता को ख़त्म करना और दक्षिणी सीमा पर राष्ट्रीय इमरजेंसी घोषित करना। नीतिगत मामलों के डिप्टी डायरेक्टर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के रूप में मिलर ने ट्रंप के आप्रवासन एजेंडे को लागू करने के लिए कई कार्यकारी आदेशों का मसौदा तैयार करने की अगुवाई की। इसमें अवैध प्रवासियों के आने पर रोक और अमेरिकी धरती पर पहले से मौजूद रहने वालों को प्रत्यर्पित करने का वादा किया गया है। इन आदेशों में से एक है जन्म आधारित नागरिकता को ख़त्म करना। यह एक ऐसा क़दम है जो अमेरिकी संविधान के 14वें संशोधन में गारंटी दिए गए ऐतिहासिक अधिकार को नकारता है और इसे कोर्ट में चुनौती भी दी गई है। स्टीफन मिलर ट्रंपिज़्म की सबसे कट्टर नीतियों के वास्तुकार ही नहीं हैं, बल्कि एक रणनीतिकार भी हैं, जिन्होंने इन्हें असरदार तरीक़े से लागू करने के दांवपेंच में महारत हासिल कर ली है। ऐसा बहुत कम होता है कि अमेरिका में रह रहे अवैध आप्रवासियों को वापस उनके देश भेजने के काम में सेना को लगाया जाए लेकिन ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में प्रवासियों को भेजने के मिशन में सेना का इस्तेमाल किया जा रहा है। दरअसल अमरीका में बसना एक ऐसा सपना है जिसे ज्यादातर लोग हकीकत में बदलना चाहते हैं, खासतौर पर अमरीकी जीवन शैली और सुविधाएं सभी को आकर्षित करती हैं। आकर्षण का यही जाल मुसीबत का सौदा साबित होता है। जब वैध तरीके से अमरीका में प्रवेश नहीं मिलता तो डंकी रास्ते से घुसने की कोशिश की जाती है। बेरोजगारी की समस्या और खूब धन कमाकर अच्छी जिंदगी जीने की चाह कई भारतीय युवाओं को विदेश जाकर रोजगार तलाशने के लिए प्रेरित करती है।

आंकड़े बताते हैं कि डंकी रूट से भारत से अमेरिका जाने वालों की संख्या काफी है। विदेश जाकर बहुत सारा धन कमाने का सपना देखने वाले हजारों लोग हर साल डंकी रूट से अमेरिका जाने का जोखिम उठाते हैं। डंकी रूट एक ऐसा जोखिम है जिसमें हर कदम पर परेशानी ही परेशानी है और कई बार मौत का भी सामना करना पड़ता है। अमेरिकी सीमा पार करने के लिए लोगों को कई महीनों तक लंबी यात्रा करनी पड़ती है। मानव तस्कर इस रूट में संचालक की भूमिका में होते हैं, जो अवैध रूप से देशों की सीमाएं लांघने में मदद के बदले लोगों से अच्छी खासी रकम लेते हैं। कई बार यह रकम 50 से 85 लाख रुपये तक होती है। अमेरिका में डॉलर में धन कमाकर भारत पैसा भेजने वाले लोगों के घर अलग से पहचाने जाते हैं। कई परिवारों के लिए उनके किसी सदस्य का अमेरिका में होना स्टेटस माना जाता है। वहीं, भारत में 2018 से लगातार बेरोजगारी दर गिरने के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की समस्या युवाओं के पलायन का कारण मानी जाती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, ज्यादातर भारत के पंजाब, हरियाणा और गुजरात के लोग बेहतर वेतन वाली नौकरियों की तलाश में अवैध रूप से अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन जैसे देशों की ओर पलायन कर रहे हैं। पिछले साल रिकॉर्ड 96,917 भारतीयों को अमेरिका में प्रवेश करने की कोशिश करते हुए पकड़ा गया या निष्कासित किया गया था, जबकि 2021 में यह संख्या 30,662 थी।

डंकी रूट का मतलब ऐसे रास्ते हैं जो अवैध रूप से लोगों को एक देश से दूसरे देश ले जाता है। सीमा नियंत्रण से बचने के लिए यह एक लंबी और चक्करदार यात्रा होती है। पंजाब में डंकी रूट एक दशक से भी ज्यादा समय से एक खुला रहस्य रहा है। यह शब्द पंजाबी शब्द डुंकी से आया है, जिसका अर्थ है एक जगह से दूसरी जगह कूदना। दिसंबर 2023 में डंकी प्रेक्टिस तब अंतरराष्ट्रीय सुर्खियों में आई थी जब फ्रांस ने मानव तस्करी के संदेह में दुबई से निकारागुआ जा रहे 303 भारतीय यात्रियों वाले एक चार्टर विमान को रोक दिया था। इनमें से अधिकांश को वापस भारत भेज दिया गया था। अमरीका और युरोपीय देशों की चकाचौंध भरी जिन्दगी की जीने की चाह में हर साल सैकड़ों लोग कालकलवित हो जाते हैं।

शरणार्थियों और प्रवासियों को अफ्रीका महाद्वीप से गुजरते समय समुद्र और जमीन पर चरम प्रकार की हिंसा, शोषण और मौत का सामना करना पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त कार्यालय (यूएनएचसीआर), अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम) और मिश्रित प्रवासन केंद्र (एमएमसी) की एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2024 के पहले पांच महीनों में कैनरी द्वीप समूह के लिए अटलांटिक मार्ग पर 5,000 लोग मारे गए। यह पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 700 प्रतिशत की वृद्धि है। अनुमान है कि सहारा रेगिस्तान को भूमध्य सागर से ज़्यादा लोग पार करते हैं और रेगिस्तान में शरणार्थियों और प्रवासियों की मौतें समुद्र में होने वाली मौतों से दोगुनी होने का अनुमान है। मध्य भूमध्यसागरीय प्रवास मार्ग दुनिया में सबसे खतरनाक मार्गों में से एक बना हुआ है। लोग बहुत खतरनाक यात्राओं पर जाने का जोखिम उठाते हैं। प्रवास मार्ग पर अपनाने के लिए मजबूर होने वाले प्रमुख कारकों में मूल देशों और मेजबान देशों में बिगड़ती स्थिति शामिल है। जैसे कि साहेल और सूडान में नए संघर्ष- पूर्व और अफ्रीका के हॉर्न में नई और दीर्घकालिक आपात स्थितियों पर जलवायु परिवर्तन और आपदाओं का विनाशकारी प्रभाव, साथ ही शरणार्थियों और प्रवासियों के प्रति नस्लवाद और ज़ेनोफोबिया। इस तरह की स्थितियां तब तक बनी रहेंगी जब तक विश्व में शांति और समानता स्थापित नहीं होगी, लोगों को शर्मनाक तरीकों से न सिर्फ अपने मूल देशों में डिपोर्ट का बल्कि मौत का सामना भी करना पड़ेगा।

राहुल गांधी का कन्फ्यूजन कांग्रेस को डुबा देगा ?

संतोष पाठक

एक स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र के लिए सत्तारूढ़ राजनीतिक दल के साथ ही मजबूत विपक्षी दल भी बहुत जरूरी माना जाता है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का यह मूल सिद्धांत माना जाता है कि जितनी मजबूत सरकार हो, उतना ही मजबूत विपक्ष भी होना चाहिए।लोकतंत्र में जनता की इच्छा सर्वोपरि होती है।जनता किसी राजनीतिक दल को बहुमत देकर सरकार चलाने का मौका देती है तो किसी राजनीतिक दल को विपक्ष में बैठाकर सरकार पर निगरानी बनाए रखने की जिम्मेदारी देती है। इसलिए यह तो स्वाभाविक है कि सरकार चलाने वाले राजनीतिक दल या गठबंधन के पास सदन में ज्यादा संख्या होती है। लेकिन जनता विपक्ष से यह उम्मीद भी करती है कि सदन में कम संख्या होने के बावजूद विपक्षी राजनीतिक दल या गठबंधन सरकार के गलत कामों की पोल लगातार खोलते रहे। स्वाभाविक तौर पर, राजनीति के मैदान में उतरने का अंतिम लक्ष्य बहुमत हासिल कर सत्ता प्राप्त करना ही होता है। लेकिन कई बार ऐसा लगता है कि इस देश के सबसे बड़े विपक्षी राजनीति दल कांग्रेस के नेता राहुल गांधी महत्वपूर्ण अवसरों पर अक्सर कन्फ्यूज होते नजर आते हैं। उनके कन्फ्यूजन का नुकसान हर बार कांग्रेस को चुनावी हार के रूप में उठाना पड़ता है। लेकिन लगातार हार मिलने के बावजूद भी राहुल गांधी के रवैये में फिलहाल तो कोई सुधार होता, नजर नहीं आ रहा है।

हाल ही में, दिल्ली में हुआ विधानसभा चुनाव राहुल गांधी के इस कन्फ्यूजन का सबसे ताजा उदाहरण है। राहुल गांधी अंतिम समय तक यह फैसला नहीं कर पा रहे थे कि अरविंद केजरीवाल साथी है या विरोधी ? कांग्रेस को बचाने के लिए दिल्ली में चुनाव लड़े या फिर इंडिया गठबंधन को बचाने के लिए केजरीवाल और उनकी पार्टी के खिलाफ मजबूती से चुनाव नहीं लड़े ? उन्होंने कभी अजय माकन को केजरीवाल के ऊपर सीधा हमला करने की अनुमति दे दी तो कभी उनकी प्रेस कांफ्रेंस को ही रद्द करवा दिया। जबकि शुरुआती दौर में राहुल गांधी ने स्वयं दिल्ली के सीलमपुर में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आम आदमी पार्टी सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल, दोनों पर एक ही सुर में तीखा निशाना साधा था।

सीलमपुर की रैली में अरविंद केजरीवाल पर तीखा राजनीतिक हमला बोलने के बाद अचानक से राहुल गांधी कुछ दिनों के लिए शांत हो गए। ऐसी खबरें निकलकर सामने आने लगी कि तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, महाराष्ट्र के दिग्गज नेता शरद पवार और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के कहने पर ना केवल उन्होंने अजय माकन की प्रेस कॉन्फ्रेंस को रद्द करवा दिया बल्कि स्वयं भी दिल्ली के चुनाव प्रचार अभियान से बाहर होकर बैठ गए। लेकिन इंडिया गठबंधन के साथियों द्वारा एक-एक करके दिल्ली के विधानसभा चुनाव में अरविंद केजरीवाल को समर्थन दिए जाने की सार्वजनिक घोषणा करने के बाद राहुल गांधी ने अपने आप को आहत महसूस किया और उसके बाद एक बार फिर से उन्होंने दिल्ली कांग्रेस के नेताओं को चुनावी अभियान में जोर-शोर से जुड़ने का निर्देश दे दिया।

इतना ही नहीं राहुल गांधी स्वयं, अरविंद केजरीवाल की नई दिल्ली विधानसभा में चुनाव

प्रचार करने के लिए पहुंच गए। जहां से उन्होंने दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय शीला दीक्षित के बेटे संदीप दीक्षित को उम्मीदवार बनाया था। जाहिर तौर पर कांग्रेस का लक्ष्य सिर्फ एक था कि कांग्रेस का उम्मीदवार भले ही चुनाव में जीत हासिल न कर पाए लेकिन अरविंद केजरीवाल सहित आप के तमाम दिग्गज नेता अपनी विधानसभा सीट हार जाएं। हुआ भी कुछ वैसा ही, दिल्ली में भले ही कांग्रेस को पिछले दो विधानसभा चुनावों की तरह इस बार भी जीरो सीट ही मिली लेकिन उसके उम्मीदवारों के कारण अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया समेत आप के कई दिग्गज नेताओं को चुनाव में करारी हार का सामना करना पड़ा। आम आदमी पार्टी के सभी बड़े नेताओं को चुनाव हरवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर राहुल गांधी ने अपनी ताकत को साबित कर दिया लेकिन यहां एक बार फिर से वही सवाल खड़ा हो रहा है कि अगर राहुल गांधी आखिरी समय तक कंफ्यूज नहीं रहते और उन्होंने कुछ महीने पहले ही दिल्ली प्रदेश कांग्रेस को अपने इरादे बता दिए होते तो शायद पार्टी ज्यादा बेहतर तरीके से चुनाव लड़ पाती और 2015 एवं 2020 के विधानसभा चुनाव में जीरो सीट हासिल करने वाली कांग्रेस पार्टी को इस बार भी जीरो के आंकड़े पर ही संतोष नहीं करना पड़ता।

राहुल गांधी का मुकाबला नरेंद्र मोदी और अमित शाह वाली भारतीय जनता पार्टी से हैं। पीएम नरेंद्र मोदी और अमित शाह के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी चुनाव जीतने की मशीन बनती जा रही है और ऐसे माहौल में कंफ्यूज होकर राजनीति करने से हार के अलावा और कुछ नहीं मिलने जा रहा है। जिसका सामना राहुल गांधी लगातार 3 लोकसभा चुनावों और कई राज्यों की विधानसभा में करते आ रहे हैं। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में 99 सीटों पर जीत हासिल कर कांग्रेस भले ही लोकसभा में सबसे बड़ा विपक्षी राजनीतिक दल बन गया हो लेकिन यह सभी जानते हैं कि कांग्रेस के 99 सीटों में अखिलेश यादव समेत इंडिया गठबंधन में शामिल अन्य कई क्षेत्रीय दलों की भी अहम भूमिका रही है। ऐसे में होना तो यह चाहिए था कि राहुल गांधी इंडिया गठबंधन के तमाम सहयोगी राजनीतिक दलों के साथ विचार विमर्श कर चुनाव से कम से कम 6-7 महीने पहले ही रणनीति तैयार कर लेते। राहुल गांधी के लिए यह तय करना भी जरूरी है कि किस राज्य में कौन सा राजनीतिक दल कांग्रेस का विरोधी है और किस राज्य में कौन सा राजनीतिक दल कांग्रेस के साथ है। दिल्ली में आखिरी समय तक राहुल गांधी यह तय ही नहीं कर पा रहे थे कि केजरीवाल साथी है या विरोधी है ?

ट्रक ने स्कूटी सवार को कुचला, पहले कार ने मारी टक्कर, पहिए के नीचे आने से हेलमेट सहित सिर हुआ चकनाचूर

मीडिया ऑडिटर, भिलाई (एजेंसी)। भिलाई में खुर्सीपार थाना अंतर्गत तेलहा नाला के पास सड़क दुर्घटना में एक स्कूटी सवार की मौके पर मौत हो गई। एक कार चालक ने स्कूटी को टक्कर मारी, जिससे वो बगल से गुजर रहे ट्रक के नीचे आ गया। ट्रक का पहिया स्कूटी सवार के सिर से गुजर गया। हेलमेट लगे होने के बाद भी उसका सिर कुचल गया और उसकी मौत हो गई।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक रायपुर निवासी धीरज कुमार भारती अपनी स्कूटी छत्त 04 रङ्ग 2233 से भिलाई की तरफ जा रहा था। उसने ड्राइविंग के दौरान हेलमेट भी पहना था। गुरुवार सुबह जब वो तेलहा नाला के पास पहुंचा और फ्लाई ओवर ब्रिज चढ़ने लगा एक तेज रफ्तार कार ने पीछे से आकर उसे टक्कर मार दी।

इससे धीरज स्कूटी लेकर सड़क पर गिर गया और उसका सिर बगल से गुजर रहे ट्रक छत्त 23 ष्ट 0484 के पहिया के नीचे आ गया। ट्रक का पहिया स्कूटी सवार के हेलमेट के ऊपर से गुजर गया। हेलमेट लोकल कंपनी का होने की वजह से क्रश हो गया और ट्रक धीर का सिर कुचलते हुए निकल गया। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

स्कूटी को नहीं आई खरोच, ट्रक जब्त: खुर्सीपार पुलिस सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सुपेला अस्पताल भिजवाया। इधर स्कूटी को जब्त कर लिया गया। दुर्घटना में स्कूटी को एक भी नुकसान नहीं हुआ। पुलिस ने ट्रक और स्कूटी को जब्त कर थाने में खड़ा करा दिया है। आरोपी ड्राइवर की तलाश जारी है।

आईएसआई मार्क वाला हेलमेट ही खरीदें: एएसपी ट्रैफिक दुर्ग ऋचा मिश्रा का कहना है कि लोगों को चाहिए कि वो हमेशा आईएसआई मार्क वाला ही हेलमेट खरीदें। मार्केट में ढ्ढस्ढ्ढ मार्क वाले हेलमेट 100 रुपए से लेकर 400 रुपए में मिल जाते हैं, लेकिन हकीकत ये है कि इतनी कम कीमत में गुणवत्ता वाला हेलमेट बन ही नहीं सकता है।

ऐसे हेलमेट आईएसआई मार्क वाला सब स्टैंडर्ड हेलमेट होता है। हेलमेट सिर्फ चालान से नहीं बचाता, बल्कि आपकी जान को भी बचाता है, इसलिए अच्छी क्वालिटी का आईएसआई मार्क वाला हेलमेट ही खरीदें।

साइज जरूर चेक करें: हेलमेट खरीदने से पहले उसे पहन कर देखें। बहुत ज्यादा ढीला और बहुत ज्यादा टाइट हेलमेट बिल्कुल न खरीदें। इससे सफर के दौरान आपको दिक्कत आएगी। इसलिए हेलमेट की फिटिंग सही होना बेहद जरूरी है। इसके लिए आप हेलमेट लेते समय अपना साइज जरूर चेक करें।

फुल फेस हेलमेट अधिक सुरक्षित: सेफ्टी के लिहाज से तो फुल फेस हेलमेट ही सबसे बेस्ट माना जाता है, क्योंकि यह आपके पूरे फेस को कवर करता है और दुर्घटना होने पर फेस को भी सुरक्षित रखता है। वहीं हाफ फेस हेलमेट आपके सिर को तो सेफ रखता है, लेकिन फेस को नहीं, इसलिए हमेशा फुल फेस हेलमेट ही खरीदना सही है।

वाइजर जरूर चेक करें: किसी भी हेलमेट को लेने से पहले वाइजर जरूर चेक कर लें, वैसे बाजार में क्लियर और डार्क टाइप वाइजर उपलब्ध हैं, लेकिन सेफ्टी के लिहाज से क्लियर वाइजर ही बेस्ट रहता है। यह रात में सबसे अच्छा रहता है क्योंकि इसमें क्लियर विजन नजर आता है।

अरपा नदी को प्रदूषण मुक्त करने की पहल
बिलासपुर नगर निगम की 47 करोड़ की योजना, 70 नालों का गंदा पानी होगा साफ

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर की जीवनदायिनी अरपा नदी को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए नगर निगम ने एक योजना तैयार की है। 47 करोड़ रुपए की इस योजना के तहत शहर से नदी में मिलने वाले 70 नाले और नालियों के पानी की सफाई की जाएगी।

नगर निगम कमिश्नर अमित कुमार ने बताया कि पूणे की कंपनी ब्लू स्ट्रीम से स्टेज-1 का डीपीआर तैयार कराया गया है। इस योजना के तहत शिवघाट और पचरीघाट बैराज के बीच उच्च क्षमता के सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) स्थापित किए जाएंगे।

डीपीआर तैयार कर शासन को भेजा जाएगा: इसके अलावा, बिलासपुर स्मार्ट सिटी द्वारा मंगला, कोनी और पचरीघाट के पास चार एसटीपी की स्थापना का कार्य मार्च तक पूरा किया जाएगा। यह योजना नगरीय प्रशासन विभाग के सचिव बसवा राजू से प्रारंभिक चर्चा के बाद तैयार की गई है और जल्द ही इसका डीपीआर प्रशासकीय स्वीकृति के लिए शासन को भेजा जाएगा। निगम ने दावा किया है कि इस योजना के क्रियान्वयन से नदी में मिलने वाले गंदे पानी की शत-प्रतिशत सफाई संभव होगी।

हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर: बता दें कि 2017 से अरपा नदी के संरक्षण के लिए निरंतर अभियान चलाया है। इसी के फलस्वरूप 6 साल पहले हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की गई, जिसकी सुनवाई जारी है।

अरपा नदी के किनारे कई प्रोजेक्ट पर काम चल रहा: इस बीच, बिलासपुर स्मार्ट सिटी द्वारा अरपा नदी के किनारे छत्तीसगढ़ का पहला क्रूज रेस्टोरेंट, देश का पहला ट्रॉपिकल गार्डन, फूड कोर्ट, वाटर स्पोर्ट्स और इंडोर वाटरफॉल जैसी सुविधाओं की योजना पर भी काम चल रहा है।

5 नाबालिग लड़कियों की शादी रुकवाई
महिला बाल विकास विभाग ने परिजनों को समझाया, बाल विवाह के दुष्परिणामों बताए

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा (एजेंसी)। जांजगीर-चांपा जिले में 5 नाबालिग लड़कियों के बाल विवाह को रोकवाया गया है। नवागढ़ थाना क्षेत्र के ग्राम अवरीद में महिला एवं बाल विकास विभाग और पुलिस की संयुक्त टीम ने एक कार्रवाई करते हुए शादी रुकवाई।

जिला बाल संरक्षण अधिकारी गजेंद्र सिंह जायसवाल के मुताबिक, पांच लड़कियों की शादी इसी महीने होनी थी। सभी लड़कियों की अंक सूची की जांच में उनकी उम्र विवाह योग्य आयु से कम पाई गई। जिसके बाद कार्रवाई की गई।

लड़कियों की उम्र विवाह योग्य आयु से कम: कलेक्टर आकाश छिकारा और महिला एवं बाल विकास विभाग की अधिकारी अनीता अग्रवाल के निर्देशन में यह कार्रवाई की गई। जांच में पता चला कि तीन लड़कियों की शादी 18, 19 और 21 फरवरी को तथा दो की शादी दिसंबर 2025 में होनी थी। सभी लड़कियों की उम्र विवाह योग्य आयु से कम पाई गई।

बाल विवाह के दुष्परिणाम बताए: अधिकारियों ने परिवारों को बाल विवाह के दुष्परिणामों से अवगत कराया। उन्हें बताया गया कि इससे न केवल लड़कियों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है, बल्कि यह कानूनी अपराध भी है, जिसमें जेल और जुर्माने का प्रावधान है। विवाह में शामिल होने वाले मेहमानों को भी सजा हो सकती है।

मेले में 13 लोगों ने मिलकर युवक को मार डाला
पहले लात-घूंसों से पीटा, फिर पीठ पर गोदा चाकू, धक्का-मुक्की से हुआ विवाद

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा (एजेंसी)। जांजगीर चांपा जिले के शिवरीनारायण मेले में 13 लोगों ने मिलकर एक युवक की हत्या कर दी। धक्कामुक्की को लेकर विवाद हुआ था जिसके बाद सभी ने उसे लात-घूंसों से पीटा और चाकू से हमला कर जान ले ली। आरोपियों में 10 नाबालिग भी शामिल हैं।

घटना बुधवार रात की है, मृतक युवक दीपेश बर्मन (19) बलौदा-बाजार जिले के मोहतरा गांव का रहने वाला है, वह अपने भाई और दोस्तों के साथ शिवरीनारायण मेले में घूमने आया था। मृतक के भाई पर भी चाकू से हमला हुआ है।

ये है पूरी घटना: एसडीओपी यदु मणि सिदार ने बताया कि दिनेश बर्मन (22) बड़ा भाई है, जो अपने छोटे भाई मृतक दीपेश बर्मन (19) और दो अन्य साथी के साथ मेला घूमने आया था। मेले में सभी झूला झूल रहे थे, तभी घूमने के दौरान आपस में कुछ युवकों से धक्कामुक्की हो गई, फिर कहा सुनी के बाद झगड़ा होने लगा।

जिसमें शिवरीनारायण के रहने वाले 10 नाबालिग लड़के और 3 युवकों ने मिलकर पहले दीपेश को लात-घूंसों से पीटा, फिर बेल्ट से मारा और आखिरी में दोनों भाई पर चाकू से हमला कर दिया।

मृतक दीपेश के भाई की हालत गंभीर: सूचना मिलते ही शिवरीनारायण पुलिस मौके पर पहुंची और घायल दीपेश को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। गुरुवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। मृतक के भाई की हालत गंभीर है, उसे बिलासपुर रेफर किया गया है।

13 आरोपियों को हिरासत में लिया: यह घटना शिवरीनारायण थाना क्षेत्र की है। पुलिस ने सभी 13 आरोपियों को हिरासत में ले लिया है, सभी शिवरीनारायण के रहने वाले है। फिलहाल पूछताछ जारी है और आगे की कार्रवाई की जाएगी।

60 लाख की डकैती केस, करीबी निकला मास्टरमाइंड
दोस्त और उसकी पत्नी के साथ मिलकर की वारदात, 59.50 लाख रुपए बरामद

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में 60 लाख की डकैती केस में पीड़ित का एक करीबी ही डकैती का मास्टरमाइंड निकला। खुलासे से पहले ही भास्कर को ये इनपुट मिल गए थे। अब पुलिस ने भी इसी बात का खुलासा करते हुए 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। साथ ही 59 लाख 50 हजार रुपए भी बरामद किए हैं। आईजी अमरेंद्र मिश्रा ने वारदाता का खुलासा करते हुए बताया कि, 36 घंटे के अंदर हमने 10 आरोपियों और लगभग पूरी रकम को जब्त करने में सफलता पाई है। डकैती का उद्देश्य पारिवारिक पैसों के बंटवारे को लेकर था। पीड़ित की एक बहन ने रिटायर्ड सूबेदार के साथ मिलकर शातिर ढंग से पूरी योजना बनाई थी।

इसमें 2 नागपुर और बिलासपुर, नांदगांव, दुर्ग के एक-एक लोग घर में घुसे थे। इसके अलावा 5 लोग और योजना में शामिल थे जो रैकी करने, पुलिस पर निगरानी रखने का काम कर रहे थे। घटना 5-6 घंटे बाद ही पैसों का बंटवारा हो गया था। आरोपी भागने के फिराक में थे लेकिन पुलिस को लीड मिली और हमने गिरफ्तारियां की।

प्रॉपर्टी विवाद के बाद करीबियों पर था शक: पीड़ित वेलु परिवार काफी बड़ा है। यह आठ भाई-बहन है। जिस जमीन को परिवार ने बेची थी। उसे लेकर परिवार के लोगों के बीच विवाद था। इनमें से कुछ लोगों में नाराजगी भी थी। इसकी भनक लगते ही पुलिस का शक करीबियों पर गहरा गया था। पुलिस लगातार परिवार के सभी सदस्यों से पूछताछ कर रही थी। वारदात के दौरान वे कहां पर थे? वारदात के पहले और बाद के एक्टिविटी पर लगातार पुलिस नजर बनाए रखी थी।

20 मिनट में कैसे हुई 65 लाख की डकैती: रायपुर में नगरीय निकाय चुनाव के दिन दिनदहाड़े करीब 20 मिनट के अंदर 65 लाख की डकैती की वारदात हुई है। यह डकैती खम्हारडीह थाना इलाके के अनुपम नगर में हुई। डकैत कमांडो ड्रेस पहनकर घर के भीतर घुसे। बुजुर्गों को पिस्टल अड़ाकर बंधक बना लिया। फिर डराने के लिए नकली इंजेक्शन लगाया। इस दौरान उन्होंने लाल सलाम कहते हुए कहा कि हल्ला किया तो घर को बम से उड़ा देंगे।

कार से उतरते हुए 5 डकैत सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए हैं। जिसमें एक महिला भी थी। पांचों डकैतों ने प्रेमा वेल्लू (71 साल), रजनी वेल्लू (67 साल) और मनोहर वेल्लू (70 साल) को बंधक बनाकर डकैती की। यह तीनों आपस में भाई-बहन है साथ रहते हैं और किसी ने शादी नहीं की है।

जमीन बेचने से मिले रुपए लेकर भागे: वेल्लू परिवार ने कुछ दिन पहले ही अपनी एक पुश्तैनी जमीन बेची थी। जिसके बाद 65 लाख रुपयों को उन्होंने घर के भीतर ही पलंग के नीचे रखा था। जिन्हें डकैत लूट कर ले गए। इसके अलावा वे आलमारी से गहने भी साथ लेकर चले गए। भागने के दौरान उन्होंने तीनों बुजुर्गों को कमरे के भीतर बंद कर दिया। जैसे-जैसे बुजुर्गों ने घर के पीछे के रास्ते से निकलकर पड़ोसियों और पुलिस को सूचना दी।

नगर पंचायत जनकपुर में गणना कार्य के लिए अधिकारियों को दिया गया प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशानुसार एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी के मार्गदर्शन में रिटर्निंग अधिकारी प्रवीण भगत की अध्यक्षता में जनपद पंचायत भरतपुर के सभा कक्ष में नगर पंचायत जनकपुर के गणना कार्य हेतु गणना पर्यवेक्षक एवं सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति की गई। इस प्रक्रिया को छत्तीसगढ़ नगरपालिका इलेक्ट्रॉनिक्स नियम 1994 के नियम 17 के तहत संपन्न किया गया। सभी नियुक्त अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

इस दौरान रिटर्निंग अधिकारी प्रवीण भगत ने बताया कि मतगणना चुनावी प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है, जहां प्रत्येक मतपत्र की गणना कर विजयी उम्मीदवार की घोषणा की जाती है। इसे निष्पक्ष, पारदर्शी और सुचारु रूप से संपन्न करने के लिए कई सावधानियां बरती जाती हैं। मतगणना केंद्र पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी और केवल अधिकृत व्यक्तियों को ही प्रवेश की अनुमति होगी, जिससे किसी भी अनियमितता को रोका जा सके। मतगणना शुरू करने से पहले ईवीएम या मतपेटियों की सील की जांच होगी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके साथ कोई छेड़छाड़ नहीं हुई है। निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार मतगणना की प्रक्रिया अपनाई जाएगी और प्रत्येक चरण का सख्ती से पालन होगा। प्रत्याशियों या उनके एजेंटों को गणना प्रक्रिया में शामिल होने की अनुमति दी जाएगी, जिससे पारदर्शिता बनी रहे। हर राउंड की गणना के बाद परिणामों की पुष्टि होगी और यदि किसी स्तर पर संदेह उत्पन्न होता है, तो पुनः गणना की जा सकती है। गणना पूरी होने के बाद अधिकृत अधिकारी द्वारा परिणाम घोषित किए जाएंगे और सभी डेटा निर्वाचन आयोग को भेजा जाएगा। निष्पक्षता बनाए रखने के लिए मीडिया को भी जानकारी दी जाएगी और निर्वाचन आयोग की वेबसाइट या अन्य आधिकारिक प्लेटफार्मों पर रुझान और अंतिम परिणाम साझा किए जाएंगे।

इस बैठक में गणना पर्यवेक्षक के रूप में शासकीय नवीन महाविद्यालय, जनकपुर के सहायक प्राध्यापक अतुल कुमार वर्मा, विनीत कुमार पाण्डेय, ऋषभ कुमार बोरकर, महावीर पैकरा और परमानंद उपस्थित रहे। वहीं, गणना सहायक के रूप में विभिन्न विभागों से अधिकारी नियुक्त किए गए, जिनमें उमेश कुमार द्विवेदी (प्रभारी प्राचार्य, शा.उ.मा.वि. कंजिया), राजकुंवर सिंह (सहायक ग्रेड-02, तहसील भरतपुर), भक्तराज सिंह (प्रधान पाठक, सेजेस जनकपुर), समय कुमार सांधे (ग्रेड-02, शा.उ.मा.वि. कुंवारपुर), बृजेश कुमार पटेल (शिक्षक, मा.शा. बरहोरी), राजेन्द्र प्रसाद दोहरे (सहायक ग्रेड-02, उप कोषालय जनकपुर), राजेंद्र सेन (व्याख्याता, शा.उ.मा.वि. भरतपुर), जसवंत सिंह (ग्रेड-02, तहसील भरतपुर), पूर्णानंद दुबे (प्रधान पाठक, प्रा.शा. सिंगरौली) और बलराम शर्मा (सहायक ग्रेड-02, तहसील भरतपुर) शामिल रहे।

मेटाडोर ने 4 लोगों को चपेट में लिया, नशे में धुत ड्राइवर को लोगों ने पीटा, अलग-अलग हादसों में 5 की मौत

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में 24 घंटे में अलग-अलग हादसे में 5 लोगों की मौत हो गई है। रायपुर में एक हादसे का लाइव वीडियो भी सामने आया है। इसमें तेज रफ्तार मेटाडोर ने चार लोगों को टक्कर मारी है। यह लोग सड़क किनारे एक ठेले में चाट खा रहे थे। इस घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने आरोपी मेटाडोर ड्राइवर को पकड़ लिया। बताया जा रहा है कि ड्राइवर नशे में था जिसके बाद लोगों ने उसकी पिटाई कर पुलिस को सौंप दिया। यह पूरी घटना गुढ़ियारी थाना क्षेत्र के भारत माता चौक की है। रायपुर के अलावा दुर्ग, भिलाई, रायगढ़ में भी हादसा हुआ। वहीं धमतरी में भी डेढ़ माह के बच्चे ने हादसे में दम तोड़ दिया।

रायपुर में बुधवार शाम 4:30 के करीब अशोक नगर की तरफ से भारत माता चौक के करीब एक तेज रफ्तार मेटाडोर आ रहा था। बताया जा रहा है कि ड्राइवर ने शराब पी रखी थी। चौक के करीब आते ही गाड़ी से उसका कंट्रोल खो गया। वाहन सबसे पहले पास ही खड़े एक चाट के ठेले से जा भिड़ा। इसके बाद वह एक के बाद एक चार लोगों को टक्कर मारकर किनारे में जाकर रुक गया। इस घटना के दौरान आसपास भारी भीड़ भी मौजूद थी। उन्होंने आरोपी ड्राइवर को पकड़कर उसकी पिटाई कर दी।

अपोलो अस्पताल पहुंच मार्ग की दुर्दशा, हाईकोर्ट ने जताई नाराजगी, पूछा- अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई क्यों नहीं की गई, किसने रोका था

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में अपोलो अस्पताल पहुंच मार्ग की दुर्दशा को लेकर हाई कोर्ट ने नाराजगी जताई है और नगर निगम आयुक्त को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने पूछा है कि अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई क्यों नहीं की गई। यह सब करने के लिए किसने रोका था।

बता दें कि अपोलो अस्पताल पहुंच मार्ग में सड़कें पर्याप्त चौड़ी नही होने से यातायात का संचालन प्रभावित होता है। मरीजों को अस्पताल पहुंचने में देरी होती है, इसी पर छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा ने स्वतः संज्ञान लिया है।

कार्रवाई करने से किसने रोका - हाईकोर्ट: बुधवार को जनहित याचिका की सुनवाई के बाद छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के डिवीजन बेंच ने निगम आयुक्त को नोटिस जारी कर शपथ पत्र के साथ जवाब पेश करने को कहा है। कोर्ट ने पूछा है कि चुनाव की अधिसूचना से पहले जब आदेश जारी किया गया है, उसके बाद भी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई क्यों नहीं की गई। यह सब करने के लिए किसने रोका था।

कोर्ट ने कहा कि अस्पताल की ओर जाने वाली सड़कें दयनीय स्थिति में हैं। सड़क इतनी संकरी है कि वाहनों का आसानी से चलना बहुत मुश्किल है और सड़क पर गड्ढे हैं। इसके अलावा, सड़कों के दोनों ओर अवैध अतिक्रमण है और अवैध अतिक्रमण पर बनी दुकानों पर आने वाले वाहनों की पार्किंग के कारण यातायात जाम की स्थिति पैदा होती है।

अतिक्रमण से बढ़ी परेशानी: अपोलो अस्पताल एक ऐसा स्थान है जहां जाने वाले अधिकांश लोग किसी न किसी आपातकालीन स्थिति का सामना कर रहे होते हैं। ऐसे में सड़कें पर्याप्त चौड़ी होनी चाहिए और यातायात का संचालन इस तरह से होना चाहिए कि मरीज कम से कम समय में अस्पताल पहुंच सकें।

आपातकालीन सेवाओं पर प्रतिकूल प्रभाव: नगर निगम के अधिकारियों ने इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। इसके अलावा अस्पताल के पास स्थित सब्जी मंडी के कारण यातायात बाधित होता है, जिससे मार्ग संकरा हो जाता है। पार्किंग स्थल की कमी के कारण आने-जाने वाले वाहनों को जाम की स्थिति का सामना करना पड़ता है, जिससे आपातकालीन सेवाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

महाधिवक्ता ने कुछ इस तरह दिया जवाब: डिवीजन बेंच ने जब महाधिवक्ता और नगर निगम, बिलासपुर के वकील से सवाल किए तो महाधिवक्ता प्रफुल्ल भरत ने बताया कि राज्य सरकार ने नगर निगम को अपोलो चौक से मानसी लाज तक सड़क चौड़ीकरण और बिजली के खंभे तथा एलटी लाइन स्थानांतरित करने के लिए पहले ही धनराशि आवंटित कर दी है।

नगर निगम के वकील कछवाहा ने यह जानकारी दी कि जुलाई 2024 में सड़क चौड़ीकरण और खंभों के स्थानांतरण के लिए कार्य आदेश जारी किया गया था। इसके साथ ही, अतिक्रमण हटाने के लिए अधिकारियों द्वारा सीमांकन भी किया जा चुका है। हालांकि, 26 फरवरी 2025 को समाप्त होने वाली आदर्श आचार संहिता लागू होने के बावजूद, अतिक्रमण हटाने की दिशा में अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है।

चीफ जस्टिस ने जताई नाराजगी: चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा ने टिप्पणी की कि यह समझ से परे है कि आम जनता के हित में होने वाले सड़क चौड़ीकरण और अतिक्रमण हटाने जैसे कार्य आदर्श आचार संहिता के लागू होने से कैसे बाधित हो सकते हैं, जबकि कार्य आदेश पहले ही जारी किए जा चुके थे। यदि अधिकारी आचार संहिता के उल्लंघन को लेकर इतने सतर्क थे, तो उन्हें चुनाव आयुक्त से अनुमति मांगकर स्वीकृत कार्यों को पूरा करने का कदम उठाना चाहिए था। डिवीजन बेंच ने नगर निगम, बिलासपुर के आयुक्त को नोटिस जारी कर व्यक्तिगत विस्तृत हलफनामा दायर करने का निर्देश दिया है।

कोर्ट ने सवाल उठाए: कोर्ट ने पूछा है कि कार्य आदेश जारी होने के बावजूद अब तक अतिक्रमण क्यों नहीं हटाया गया और सड़क चौड़ीकरण का कार्य क्यों शुरू नहीं हुआ। आदर्श आचार संहिता जो 26 फरवरी 2025 को समाप्त हो रही है, उसके प्रभाव में होने के बावजूद कोई कार्रवाई न किए जाने पर भी कोर्ट ने सवाल उठाए हैं।

परिसीमन से 4 लाख से ज्यादा वोटर प्रभावित
बिना वोट दिए लौटे, वोटर-लिस्ट से सैकड़ों नाम गायब, वकील बोले-हाईकोर्ट में पिटीशन दायर करेंगे

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में नगर निकाय चुनाव से पहले हुए परिसीमन के कारण 4 लाख से अधिक मतदाता प्रभावित हुए हैं। इसका असर मतदान के दौरान भी देखने को मिला। सैकड़ों मतदाताओं के मतदान केंद्र बदल गए। जिससे उन्हें मतदान केंद्र ढूंढने में परेशानी हुई। ज्यादातर मतदाता बिना वोट दिए ही लौट गए। कुछ लोगों ने कहा कि उनका नाम मतदाता सूची से काट दिया गया, जबकि वे पिछले कई चुनावों से वोट करते आ रहे हैं। लोगों ने बताया कि, वोटिंग के दौरान मतदान केन्द्रों में भी उन्हें जानकारी देने वाला कोई नहीं था कि, उनके नाम मतदाता सूची से क्यों काटे गए।

हाईकोर्ट में दायर करेंगे याचिका: इंद्रावती कॉलोनी निवासी एडवोकेट हितेंद्र तिवारी ने बताया कि, उनका परिवार पं. रविशंकर शुक्ल वार्ड में रहता है। वे हर बार नूतन स्कूल में वोटिंग करते हैं। लेकिन इस बार उनका नाम ही नहीं था। उन्होंने शांति नगर स्कूल, बीपी पुजारी स्कूल समेत वार्ड के अन्य सभी मतदान केंद्रों में पहुंचकर अपना नाम ढूंढा, लेकिन कहीं नहीं मिला। जिससे पूरा परिवार वोट नहीं डाल सका। हितेंद्र तिवारी रायपुर जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष हैं। उन्होंने बताया कि, उनके कॉलोनी के रहने वाले 20 से अधिक लोगों के नाम मतदाता सूची में नहीं है। उन्हें वोटिंग के अधिकार से वंचित किया गया है। इसके खिलाफ वे हाईकोर्ट में याचिका भी दायर करेंगे।

पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़ बोले-आर्टिकल 370 को खत्म होना ही था

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचू? ने इस बात से इनकार किया है कि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण पर फैसले से पहले उन्होंने भगवान को याद कर समाधान के लिए प्रार्थना की थी। जस्टिस चंद्रचू? (रिटायर्ड) ने बीबीसी को दिए एक इंटरव्यू में इस बात का खुलासा किया। उन्होंने कहा कि ये बातें सोशल मीडिया की उपज हैं। मेरी बात को गलत तरीके से पेश किया गया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाने के केंद्र सरकार के फैसले पर कहा- अनुच्छेद 370 संविधान बनने के साथ ही शामिल किया गया था और ट्रांजिशन प्रोविजंस शीर्षक अध्याय का हिस्सा था, बाद में इसका नाम बदलकर टेंपरेरी ट्रांजिशनल प्रोविजंस कर दिया गया। संविधान बना तो यह माना गया कि ये प्रावधान धीरे-धीरे खत्म हो जाएंगे। जस्टिस चंद्रचूड़ ने बीबीसी को दिए इंटरव्यू में राम मंदिर के अलावा जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाने के केंद्र सरकार के फैसले पर सहमति, राहुल गांधी को मानहानि मामले में जमानत, सीएए न्यायपालिका में जेंडर रेश्यो और पीएम से मुलाकात पर भी अपनी बात रखी।

महाशिवरात्रि पर्व से आरंभ होगा विक्रमोत्सव-2025-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि उज्जैन में महाशिवरात्रि पर्व 26 फरवरी से विक्रमोत्सव-2025 का आरंभ होगा। सृष्टिकर्ता महादेव के महोत्सव से सृष्टि के आरंभ दिवस वर्ष प्रतिपदा 30 मार्च तक चलने वाला विक्रमोत्सव, सम्राट विक्रमादित्य के युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर केंद्रित रहेगा। इसके अंतर्गत साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ही ज्योतिर्विज्ञान, विचार गोष्ठियाँ, इतिहास और विज्ञान समागम, विक्रम व्यापार मेला, लोक एवं जनजातीय संस्कृति पर आधारित गतिविधियाँ संचालित होंगी।

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के ऐप के प्रवर्तन, हस्तशिल्प, पारंपरिक व्यंजन, वस्त्रोद्योग, हथकरघा उपकरणों की प्रदर्शनी के साथ क्षेत्रीय, पौराणिक फिल्मों के महोत्सव और श्रीकृष्ण पर केन्द्रित विशेष फिल्मों का प्रदर्शन और प्रस्तुतियाँ भी विक्रमोत्सव का हिस्सा रहेंगे। कार्यक्रम में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के साथ ही शोधपरक पुस्तकों, ग्रन्थों का लोकार्पण और विक्रम

पंचांग का प्रकाशन भी होगा। सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों को समाहित किए विरासत से विकास का यह विक्रमोत्सव अपने आप में अनूठा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में विक्रमोत्सव-2025 की आयोजन समिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विक्रमोत्सव के कैलेंडर का विमोचन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विक्रमोत्सव का आयोजन, सम्राट विक्रमादित्य के बहुआयामी व्यक्तित्व की गरिमा के अनुरूप हो। कार्यक्रम का प्रारंभ अत्यंत निकट है, अतः सभी विभाग, समन्वयपूर्वक निर्धारित समय से पहले ही सभी तैयारियां पूर्ण करना सुनिश्चित करें। आयोजन के सहभागी बनने वाले सभी विद्वतजन, कलाकारों और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों का स्वागत और व्यवस्था अतिथि देवो भव- के भाव से की जाए। यह भी सुनिश्चित किया जाए कि महाशिवरात्रि पर आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो और पर्व की व्यवस्थाएं भी प्रभावित नहीं हों।

राम मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्रदास को जल समाधि

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में राम मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्रदास को जल समाधि दी गई। उनके पार्थिव शरीर को 25-25 किलो बालू से भरी 4 बोरियों से बांधा गया। फिर सरयू की बीच धारा में शरीर को प्रवाहित कर दिया गया। आचार्य सत्येंद्रदास का बुधवार को 80 साल की उम्र में निधन हो गया था। इससे पहले, पार्थिव शरीर पालकी से लता मंगेशकर चौक होते हुए सरयू घाट लाया गया। इस दौरान उनके शिष्य प्रदीप और विजय साथ थे। पहले पार्थिव शरीर को सरयू में स्नान कराया गया। इसके बाद संत तुलसीदास घाट पर जल समाधि दी गई। दोपहर करीब 12 बजे सत्येंद्र दास का पार्थिव शरीर रथ पर रखा गया। फिर बैंड-बाजे के साथ अंतिम यात्रा शुरू हुई। इस दौरान लोगों ने फूल बरसा कर उन्हें अंतिम विदाई दी। श्रद्धालुओं की भीड़ के चलते आचार्य सत्येंद्रदास की अंतिम यात्रा राम मंदिर के सामने से नहीं निकाली गई। आचार्य के अंतिम दर्शन के लिए सरयू घाट के किनारे हजारों लोग कई घंटे तक खड़े रहे। केंद्रीय मंत्री सतीश शर्मा और अयोध्या सांसद अवधेश प्रसाद ने भी आचार्य सत्येंद्र दास को श्रद्धांजलि दी। आचार्य सत्येंद्र दास ने बुधवार को लखनऊ पीजीआई में आखिरी सांस ली। 3 फरवरी को ब्रेन हेमरेज के बाद उनको अयोध्या से लखनऊ रेफर किया गया था।

राहुल-केजरीवाल से मिले आदित्य ठाकरे

नई दिल्ली (एजेंसी)। शिवसेना नेता आदित्य ठाकरे ने दिल्ली दौरे के दौरान गुरुवार को राहुल गांधी और केजरीवाल से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि सभी विपक्षी सांसदों को सोचना चाहिए कि हमारा अगला कदम क्या होगा, क्योंकि हमारे लोकतंत्र में इलेक्शन अब फेयर और निष्पक्ष नहीं रह गए हैं।

उन्होंने आगे कहा कि केजरीवाल ने 10 साल में बहुत काम किए हैं, जिन्हें जनता जानती है। भाजपा को चुनाव आयोग का आशीर्वाद था, इसी वजह से दिल्ली में जीती है। उसे चुनाव आयोग का आभार

करना चाहिए। दिल्ली में काफी जगह वोट काटे गए थे, चुनाव आयोग ने लोगों से वोट डालने का अधिकार छीना है।

1. चुनाव आयोग ने कई राज्यों में हेराफेरी की आदित्य ठाकरे ने चुनाव आयोग पर महाराष्ट्र, हरियाणा, ओडिशा और दिल्ली सहित कई राज्यों में मतदाता सूचियों में बड़े पैमाने पर हेराफेरी करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ने लोगों के वोट देने के अधिकार को छीन लिया है और वह इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए भी तैयार नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि विपक्ष इस मामले को औपचारिक रूप से उठाएगा। साथ ही ठाकरे ने जोर देकर कहा कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव देश के लिए जरूरी हैं। ठाकरे ने कहा कि सरकारें आती-जाती रहती हैं, लेकिन रिश्ते बने रहते हैं। हमने केजरीवाल से दोस्ती के संकेत के तौर पर बैठक की। इसमें शिवसेना संजय राउत और प्रियंका चतुर्वेदी भी मौजूद थे।

मीटिंग में दिल्ली में हुए विधानसभा चुनाव और विपक्षी दल इंडिया ब्लॉक के भविष्य पर चर्चा की।

वक्फ बिल पर जेपीसी रिपोर्ट संसद में पेश, हंगामा

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद में बजट सत्र के पहले चरण के आखिरी दिन जेपीसी रिपोर्ट पेश की गई। इस दौरान विपक्ष ने असहमतियों को हटाने पर हंगामा किया। फिर सदन से वॉकआउट कर गए। बजट सत्र के पहले चरण के आखिरी दिन संसद में वक्फ संशोधित बिल पर जेपीसी रिपोर्ट पेश करने को लेकर हंगामा हुआ। राज्यसभा में भाजपा सांसद मेधा कुलकर्णी ने तो लोकसभा में जेपीसी चेयरमैन और भाजपा सांसद जगदंबिका पाल ने इस रिपोर्ट को पेश किया। इसे लेकर दोनों सदनों में विपक्ष ने आपत्ति जताई। इनका आरोप है कि जेपीसी रिपोर्ट में उनकी असहमतियों को डिलीट कर दिया गया। राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, जेपीसी की यह रिपोर्ट फर्जी है। इसमें विपक्ष की असहमतियों को डिलीट कर दिया गया। ये असंवैधानिक है।आप सांसद संजय सिंह ने कहा, हमने अपना पक्ष रखा। इससे सहमत या असहमत हो सकते हैं, लेकिन कूड़ेदान में कैसे डाल सकते हैं।इस पर गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, विपक्ष के कुछ सदस्यों ने आपत्ति जताई थी कि उनकी राय को इसमें नहीं जोड़ा गया। मैं कहना चाहता हूं कि विपक्ष के सदस्य संसदीय कार्य प्रणाली के तहत जो कुछ भी जोड़ना चाहते हैं, वो जोड़ सकते हैं।

दिल्ली में आरएसएस दफ्तर केशव कुंज की नई इमारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिल्ली कार्यालय %केशव कुंज की नई बिल्डिंग बनकर तैयार हुई है। संघ 1962 से यहां काम कर रहा है। नया कंस्ट्रक्शन 2018 में शुरू हुआ था, जो 8 साल बाद पूरा होने को है।

गुजरात के आर्किटेक्ट अनूप दवे ने इसे डिजाइन किया है। बिल्डिंग को मॉडर्न और ओल्ड दोनों की तरह का लुक दिया गया है। 3.75 एकड़ में फैले 150 करोड़ की लागत से बनाए गए नए दफ्तर में 12 मंजिला वाले 3 टावर-साधना, प्रेरणा और अर्चना हैं। इनमें 300 कमरे-ऑफिस हैं। दावा है कि यह रकम 75 हजार लोगों ने दान दी थी। मेन ऑडिटोरियम विश्व हिंदू परिषद नेता अशोक सिंघल की स्मृति में बनाया गया है, जो अयोध्या में राम मंदिर के मुख्य समर्थकों में से एक थे। इसमें 463 लोग बैठ सकते हैं, जबकि दूसरे हॉल में 650 सदस्य बैठ सकते हैं। इस बिल्डिंग में लाइब्रेरी, हेल्थ क्लिनिक (5 बिस्तर वाला) और सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट भी है।

बिना बताए बैंकॉक ट्रिप पर निकला पूर्व मंत्री का बेटा

पुणे (एजेंसी)। पूर्व स्वास्थ्य मंत्री तानाजी सावंत शिवसेना प्रमुख और डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे के करीबी हैं। सावंत उद्धव ठाकरे के खिलाफ बगावत करने वाले विधायकों में शिंदे के साथ थे। महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री और शिवसेना शिंदे गुट के नेता तानाजी सावंत का बेटा ऋषिराज सावंत अपने दोस्तों के साथ चार्टर्ड प्लेन से बैंकॉक ट्रिप पर निकला था। 10 फरवरी की शाम को उनकी चार्टर्ड फ्लाइट पुणे से उड़ान भर चुकी थी, लेकिन आधे रास्ते में ही फ्लाइट को वापस बुला लिया गया। दरअसल, पुलिस को किसी अनजान शख्स ने सूचना दी कि ऋषिराज सावंत का अपहरण हो गया है। पुलिस ने इसकी जानकारी तानाजी सावंत को दी। एयरपोर्ट से फ्लाइट के पायलटों को जब पुणे लौटने का मैसेज मिला, तो उन्हें लगा कि यह कोई मजाक है। लेकिन जब विमानन मंत्रालय और डायरेक्टर जनरल ऑफ सिविल एविएशन से इसकी पुष्टि हुई।

महबूबा बोलीं-कश्मीर में सब ठीक तो पाकिस्तान का रास्ता खोलो

जम्मू (एजेंसी)। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने कहा कि नरेंद्र मोदी और अमित शाह कहते हैं कि जम्मू-कश्मीर में सब कुछ ठीक है। अगर सब ठीक हो गया है तो पाकिस्तान के साथ रास्ते खोलो। ताकि वे यहां आकर देख सकें कि हम कैसे रहते हैं और हमारे पास यहां क्या है।

उन्होंने कहा कि इनको

पता है कि 370 हटाकर कोई मसला हल नहीं किया है। क्योंकि आज भी कश्मीर में अगर पत्ता हिलता है तो अमित शाह दिल्ली में मीटिंग बुलाते हैं। उनके मन में डर है कि जो जम्मू कश्मीर में जो किया वह एक लावा बना है जो कभी भी फट सकता है।

उन्होंने कहा- भाजपा जम्मू कश्मीर की समस्या को जिंदा रखकर पूरे मुल्क में वोट लेना चाहती है। पाकिस्तान में सेना कश्मीर की समस्या को जिंदा रखना चाहती है।

सेना बोली- पाकिस्तान बॉर्डर पर युद्धविराम लागू

श्रीनगर(एजेंसी)। भारतीय सेना ने कहा कि नियंत्रण रेखा पर युद्धविराम लागू है। दोनों सेना (भारत और पाकिस्तान) आपसी समझ बनाए हुए हैं। फिलहाल स्पष्ट पर कोई गोलीबारी नहीं हुई। कोई छोटी घटनाएं भी नहीं हुईं। पाकिस्तान आर्मी के अफसरों से इस मसले पर बात हो चुकी है। इंडियन आर्मी अलर्ट है और हालात पर नजर रखे हुए है।इससे पहले खबर आई थी कि जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में बुधवार देर रात पाकिस्तान सैनिकों ने सीजफायर तोड़ा। पाकिस्तान की ओर से भारतीय सीमा में गोलीबारी की गई, हालांकि कोई नुकसान नहीं हुआ।

पाकिस्तानी गोलीबारी का भारतीय सेना ने भी जवाब दिया। आर्मी सूत्रों ने बताया कि भारतीय सेना के जवाबी हमले में पाकिस्तान के कई सैनिकों को भारी नुकसान हुआ है। वहीं, सोशल मीडिया पर पाकिस्तानी अधिकारियों का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वे अपने सैनिकों को श्रद्धांजलि देते हुए दिख रहे हैं।

कुछ रिपोर्ट्स में 6 लोगों के मारे जाने की बात कही गई।

मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगाया गया

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में केंद्र सरकार ने गुरुवार को राष्ट्रपति शासन लगा दिया है। 9 फरवरी को मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने अपना इस्तीफा गवर्नर को सौंप दिया था। राज्य में 21 महीने (3 मई 2023) से जारी जातीय हिंसा के चलते 300 से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं। इसी के चलते बीरेन सिंह पर इस्तीफे का काफी दबाव था। विपक्षी पार्टियां भी लगातार एनडीए से इस मुद्दे पर सवाल पूछ रही थीं।

आईटीएलएफ ने

कहा- हमारी मांग अलग प्रशासन की कूकी समुदाय की संस्था आईटीएलएफ के प्रवक्ता गिन्जा वूलजोंग ने कहा- बीरेन सिंह ने मणिपुर विधानसभा में अविश्वास प्रस्ताव में हार के डर से इस्तीफा दिया है। हाल ही में उनका एक ऑडियो टेप लीक हुआ था, जिसका संज्ञान सुप्रीम कोर्ट ने लिया है। ऐसे में अब भाजपा के लिए भी उन्हें बचाना मुश्किल लग रहा है। बिरेन चाहे मुख्यमंत्री रहें या नहीं, हमारी मांग अलग प्रशासन की है। मैतेई समुदाय ने हमें अलग किया है। अब हम पीछे नहीं हट सकते। बहुत खून बह चुका है। एक राजनीतिक हल ही हमारी मुसीबत का समाधान कर सकता है। कूकी समुदाय अलग प्रशासन की मांग को लेकर अब भी जस का तस कायम है।

आप विधायक अमानतुल्लाह की गिरफ्तारी पर 24 फरवरी तक रोक

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की एक कोर्ट ने पुलिस टीम पर हमला मामले में ?क्क विधायक अमानतुल्लाह खान की गिरफ्तारी पर 24 फरवरी तक रोक लगा दी है। गुरुवार को राऊज एवेन्यू कोर्ट के स्पेशल जज जस्टिस जितेंद्र सिंह ने खान को आदेश दिया कि जब भी जांच अधिकारी बुलाएं, वे जांच में शामिल हों।

इसके बाद अमानतुल्लाह जामिया नगर पुलिस स्टेशन पहुंचे। कोर्ट ने अमानतुल्लाह की अग्रिम जमानत वाली याचिका सुनवाई करते हुए यह फैसला दिया। वहीं, जस्टिस सिंह ने पुलिस को हमले से जुड़े सभी डाक्यूमेंट्स और सीसीटीवी फुटेज कोर्ट में पेश करने का भी आदेश दिया। दरअसल, आप विधायक अमानतुल्लाह पर जामिया नगर में 10 फरवरी को पुलिस टीम पर कथित हमले की अगुवाई करने का आरोप है। हमले के बाद दिल्ली पुलिस ने खान के खिलाफ स्नङ्कक्रदर्ज की थी। पुलिस का कहना है कि खान 3 दिन से फरार हैं। आप विधायक ने कहा- कल मैंने कोर्ट ज्वाइन किया, परसों कोर्ट ज्वाइन किया। कल भी मैंने सीबीआई कोर्ट ज्वाइन किया। पुलिस कहां ढूंढ़ रही थी भाई।

सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाईकोर्ट को फटकार लगाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को बॉम्बे हाईकोर्ट को फटकार लगाई। तलाक के मामले में हाईकोर्ट ने महिला के लिए %नाजायज पत्नी% और %वफादार मालकिन% जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया था। जस्टिस अभय एस ओका, जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने कहा- ऐसे शब्द महिला विरोधी हैं और इनका प्रयोग महिला के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। बेंच ने कहा, इस तरह के शब्दों का इस्तेमाल संविधान के लोकाचार और आदर्शों के खिलाफ हैं। दुर्भाग्य से बॉम्बे हाईकोर्ट ने नाजायज पत्नी शब्द का इस्तेमाल करने की हद तक जाकर ऐसा किया। चौंकाने वाली बात यह है कि पैराग्राफ 24 में हाईकोर्ट ने ऐसी पत्नी को वफादार मालकिन भी बताया है। बेंच ने कहा- संविधान की धारा 21 के तहत प्रत्येक व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन जीने का मौलिक अधिकार है। किसी महिला को अवैध पत्नी या वफादार मालकिन कहना भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत उस महिला के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होगा।

विवाह को अमान्य घोषित करने वाली महिला को %नाजायज पत्नी% कहना बहुत गलत है। इससे उसकी गरिमा को ठेस पहुंची है। बेंच ने टिप्पणी करते हुए कहा कि अमान्य विवाह के मामलों में हाईकोर्ट ने पतियों के लिए ऐसे विशेषणों का उपयोग नहीं किया।

राजस्थान में बन रही कैंसर की वैक्सीन, कीमत 10 हजार

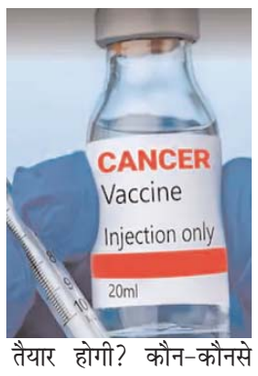

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान में पहली बार देसी तकनीक से विकसित कैंसर वैक्सीन तैयार की जा रही है। ये वैक्सीन महज 10 हजार रुपए के खर्च में कैंसर का इलाज करने में सक्षम होगी। महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज, जयपुर को डेंड्रिटिक सेल वैक्सीन बनाने की अनुमति मिल गई है। इस वैक्सीन से 5 तरह के कैंसर का इलाज संभव होगा। इसके देश की पहली स्वदेशी कैंसर वैक्सीन का दावा किया जा रहा है। इस वैक्सीन पर शोध कर रहे महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, जयपुर के सेंटर फॉर कैंसर इम्यूनोथेरेपी के निदेशक डॉ. अनिल सूरी से बात की। उन्होंने बताया कि 27 साल की रिसर्च के बाद वो इस वैक्सीन की तकनीक तक पहुंचे हैं। ये वैक्सीन कब तक

तैयार होगी? कौन-कौनसे कैंसर किस स्टेज में ठीक हो सकेंगे? कैंसर के इलाज में खर्च कितना आएगा? यह वैक्सीन कितनी सुरक्षित है? जानिए वैक्सीन से जुड़े सवालों के जवाबज्

डॉ. अनिल सूरी - यह डेंड्रिटिक सेल वैक्सीन एक इम्यूनोथेरेपी आधारित कैंसर वैक्सीन है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कैंसर कोशिकाओं को पहचानने और नष्ट करने के लिए प्रशिक्षित करती है। इसे व्यक्तिगत रूप से तैयार किया जाता है, यानी यह वैक्सीन हर मरीज के कैंसर टाइप के हिसाब से तैयार होगी। यह कैंसर के महंगे इलाज का सस्ता विकल्प बन सकेगी। डॉ. अनिल सूरी ञ्इसमें मरीज के शरीर से डेंड्रिटिक कोशिकाएं निकाली जाती हैं। डेंड्रिटिक सेल इम्युनिटी सिस्टम में मौजूद सफेद रक्त कोशिकाओं का एक प्रकार होती हैं। ये इम्यून सिस्टम को सक्रिय करने में मदद करती हैं।

गेंदबाजी एक्शन को लेकर आस्ट्रेलियाई क्रिकेटर कुहनेमन का बायोमीट्रिक टेस्ट

सिडनी (एजेंसी)। श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के दौरान अंपायरों द्वारा गेंदबाजी एक्शन की शिकायत किये जाने के बाद आस्ट्रेलिया के बायें हाथ के स्पिनर मैट कुहनेमन की बायोमीट्रिक जांच होगी। आस्ट्रेलियाई मीडिया ने कहा कि कुहनेमन की शिकायत अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद से की गई है और अगर गेंदबाजी एक्शन अवैध पाया जाता है तो उन पर प्रतिबंध लग सकता है। क्रिकेट आस्ट्रेलिया ने कहा ,'' श्रीलंका के खिलाफ गॉल में दूसरे टेस्ट के दौरान मैच अधिकारियों द्वारा की गई शिकायत की जानकारी आस्ट्रेलियाई टीम को दी गई

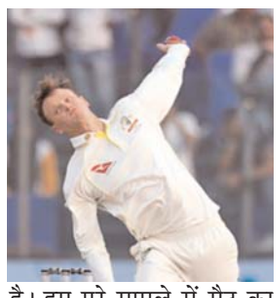

है। हम पूरे मामले में मैट का सहयोग करेंगे।'' क्रिकेट आस्ट्रेलिया ने बताया कि कुहनेमन 2017 में पदार्पण के बाद से 124 पेशेवर मैच खेल चुके हैं लेकिन उनके गेंदबाजी एक्शन की कभी शिकायत नहीं हुई। श्रीलंका के खिलाफ दो मैचों में उन्होंने 16 विकेट लिये। उनकी बायोमीट्रिक जांच ब्रिसबेन में होगी।

आईसीसी एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में दूसरे नंबर पर पहुंच शुभमन

अहमदाबाद (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के युवा सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे और अंतिम एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में शतक लगाने के साथ ही एकदिवसीय मैचों में सबसे तेजी से 2,500 रन पूरे किये हैं। शुभमन ने एकदिवसीय प्रारूप में लगातार तीसरी बार 50 रन या उससे अधिक रन बनाये हैं। इस वह ताजा आईसीसी पुरुष एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में दूसरे नंबर पर पहुंच गये हैं। वहीं पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम नंबर एक हैं।

इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो एकदिवीसय में 87 और 60 रनों की पारी के कारण शुभमन को एक स्थान का लाभ हुआ है। वहीं रोहित एक स्थान के नुकसान के साथ ही तीसरे नंबर पर फिसल गये हैं। वहीं भारत के ही विराट कोहली दो स्थान ऊपर आकर छठे स्थान पर आ गए हैं। मध्यक्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर 11वें से एक स्थान के लाभ के साथ ही शीर्ष 10 में पहुंच गए हैं। शुभमन ने इस टूर्नामेंट के 3 मैचों में 86 की औसत के साथ अब तक 259 रन बनाये हैं। ऐसे में अब उनके पास 19 फरवरी से शुरु हो रही चैम्पियंस ट्रॉफी में बेहतर प्रदर्शन कर बाबर की जगह नंबर एक बनने का अवसर है।

आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में बुमराह की कमी खलेगी -कपिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव ने कहा है कि आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम को = मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की कमी खलेगी। कपिल ने कहा कि बुमराह जैसे बड़े खिलाड़ी के नहीं होने से टीम की मुश्किलें बढ़ सतकी हैं। बुमराह पीठ के निचले हिस्से में दर्द के कारण आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए शामिल नहीं किये गये हैं। कपिल ने कहा कि बुमराह ने पिछले 2 साल में अपने अच्छे प्रदर्शन से भारतीय टीम को काफी लाभ पहुंचाया है। मुझे नहीं लगता कि इस बीच दुनिया के किसी अन्य तेज गेंदबाज ने उनसे बहतर प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा कि बुमराह, रविचंद्रन अश्विन, अनिल कुंबले, जहीर खान जैसे मैच विजेता खिलाड़ियों का चोटिल हो जाना किसी भी टीम के लिए परेशानी का कारण बन सकत है। मैं उनकी शीघ्र वापसी की उम्मीद करता हूं।वहीं कपिल ने स्पिनर वरुण चक्रवर्ती को चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारतीय टीम में चुने जाने को सही बताया है। उन्होंने कहा कि उसके पास योग्यता है और वह अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। जब भी वरुण जैसे कोई गेंदबाज टीम से जुड़ता है तो टीम पर उसका प्रभाव होता है। उसके लिए सबसे अहम बात यह रहेगी कि विरोधी टीम के बल्लेबाज उसकी गेंद को समझने और उन्हें खेलने में कितना समय लगाते हैं। कपिल ने कहा कि पिछले एक या दो साल में उसने जबरदस्त प्रदर्शन किया है।

गुकेश में देखने को मिली एमएस धोनी की झलक

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व शतरंज चैंपियनशिप में डिंग लिरेन के खिलाफ ऐतिहासिक जीत दर्ज करने वाले डी गुकेश अपने शांत व्यवहार के लिए जाने जाते है। जीत के बाद भी उन्होंने शांत होकर ही अपनी जीत का जश्न मनाया। जिस शांत तरीके से गुकेश ने अपनी जीत और सफलता की खुशी मनाई थी, उसे देखकर पूरी दुनिया हैरान थी। ये पता चला कि मानसिक कंडीशनिंग कोच पैडी अप्टन गुकेश की विश्व चैंपियनशिप टीम का हिस्सा थे। अप्टन 2011 के वनडे विश्व कप जीत के दौरान भारतीय क्रिकेट टीम के साथ काम करने के लिए प्रसिद्ध हैं। वीसेनहॉस फ्रीस्टाइल शतरंज ग्रैंड स्लैम में एक बार फिर गुकेश ने अपनी शांति दिखाई है, जिसे हार्ट-रेट मॉनीटर ने और भी पुख्ता किया है। फ्रीस्टाइल ग्रैंड स्लैम टूर के शुरुआती चरण में जीत हासिल करने में विफल रहने के बावजूद, गुकेश ने टूर्नामेंट के माध्यम से दिखाया है कि वह दबाव में भी प्रदर्शन करने के लिए तैयार है, और इससे प्रभावित नहीं होता है, कुछ ऐसा जो भारतीय क्रिकेट के दिग्गज एमएस धोनी की याद दिलाता है। फेबियानो कारुआना के खिलाफ क्वार्टर फाइनल में हार के पहले गेम के दौरान, गुकेश के पास घड़ी में केवल एक मिनट बचा था, और उसकी हृदय गति 78 बीट्स प्रति मिनट (बीपीएम) थी। इस बीच, कारुआना, जिसकी घड़ी में 35 सेकंड अधिक थे, आश्चर्यजनक रूप से किनारे पर था, और उसकी हृदय गति 124 बीपीएम थी। वीसेनहाउस में चल रहे फ्रीस्टाइल ग्रैंड स्लैम में दिलचस्प बात यह है कि मॉनिटर हैं जो गेम के दौरान खिलाड़ियों की हृदय गति को मापते हैं और उन्हें वास्तविक समय में स्क्रीन पर प्रदर्शित करते हैं। इस बीच, यहां तक कि कारुआना ने गेम के दौरान गुकेश के संयम की ओर भी ध्यान दिलाया। डेविड हॉवेल से बात करते हुए उन्होंने पूछा, उनकी हृदय गति 70 के आसपास थी? उन्होंने कहा, यह काफी प्रभावशाली है... इसके अलावा, मैग्नस की हृदय

गति भी ज्यादा नहीं बढ़ती है। इस बीच, आधिकारिक टिप्पणीकार पीटर लेको और जुडिट पोलगर भी गुकेश के हृदय गति मॉनीटर नंबरों से हैरान हैं। लेको ने पोलगर से उनके लाइव कवरेज के दौरान पूछा, वह ऐसा कैसे करता है? वह कौन है!

पिछले साल सिंगापुर में गुकेश की जीत के बाद, अप्टन ने भारतीय जीएम की बाहरी दुनिया से खुद को अलग करने की क्षमता के बारे में भी बताया। हिंदुस्तान टाइम्स से बात करते हुए उन्होंने कहा, यह उन कौशलों में से एक है जिसकी एक शतरंज खिलाड़ी को ज़रूरत होती है। हाँ। किसी भी एथलीट के लिए, जो सबसे महत्वपूर्ण है वह है सही ढंग से ध्यान केंद्रित करना और पूरी तरह से मौजूद रहना। और विशेष रूप से ऐसे खेल में जो लगभग पूरी तरह से मानसिक होता है और 6-7 घंटे तक चलता है, ध्यान बनाए रखने की क्षमता वास्तव में महत्वपूर्ण है, और बहुत कम लोग छह घंटे तक लगातार ध्यान केंद्रित करके पूरी तरह से ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। कुछ खेलों में हम इसे स्विच अप और स्विच डाउन करने में सक्षम होना कहते हैं।

उन्होंने कहा कि आपके पास ऐसे समय होते हैं जब आप अगले कदम को समझते हैं। आप सभी विकल्पों को समझते हैं, आपने वह सब सोच लिया है जो आपको करने की ज़रूरत है, और फिर आपको बस अपने दिमाग को थोड़ा आराम देने की ज़रूरत है। आप अपनी आँखें बंद कर लेते हैं और यह वास्तव में सभी दृश्य उत्तेजना को दूर करने के बारे में है। और यह लगभग रिचार्ज करने, थोड़ा रिचार्ज करने और बैटरी को टॉप अप करने का एक तरीका है।

जसप्रीत बुमराह के चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर होने पर गौतम गंभीर ने तोड़ी चुप्पी

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया को उस वक्त 440 वोल्ट का झटका लगा, जब धाकड़ तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह चैंपियंस ट्रॉफी 2025 से बाहर हो गए। वह पीठ के निचले हिस्से में चोट से जूझ रहे हैं। बुमराह ऑस्ट्रेलिया दौरे पर पांचवें और आखिरी टेस्ट के दौरान चोटिल हुए थे। संभावना जताई जा रही थी कि बुमराह 19 फरवरी से शुरू होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी तक फिट हो सकते हैं। लेकिन बीसीसीआई ने हाल ही में अपडेटेड भारतीय स्क्वॉड से जसप्रीत बुमराह का नाम हटा दिया। उनके रिप्लेसमेंट के रूप में पेसर हर्षित राणा आए हैं। अब टीम इंडिया के हेड को गौतम गंभीर ने बुमराह के चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर होने पर चुप्पी तोड़ी है। गंभीर ने अमहदाबाद में तीसरे वनडे के बाद कहा कि, जाहिर है कि वह बाहर हो गए हैं। लेकिन मैं आपको सारी डिटेल नहीं दे सकता क्योंकि ये मेडिकल टीम पर निर्भर करता है कि वह कितने समय तक बाहर रहेंगे। एनसीए में मेडिकल टीम ही निर्णय लेती है। कोच ने कहा कि, जाहिर है कि हम उन्हें टीम में चाहते थे। हम जानते हैं कि वह क्या कर सकते हैं। वह एक वर्ल्ड

क्लास प्लेयर हैं। हालांकि, कुछ चीजें आपके हाथ में नहीं होती। ये युवा खिलाड़ियों, जैसे हर्षित राणा और अर्शदीप सिंह के लिए एक अवसर है। कभी कभी ये ऐसे अवसर होते हैं जिनकी आपको तलाश होती है। हर्षित ने पूरी सीरीज में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। उन्होंने कुछ अहम विकेट लिए हैं। हम सभी जानते हैं कि अर्शदीप क्या कर सकते हैं। हां बुमराह की कमी हमेशा खलेगी। लेकिन शमी जैसे अनुभवी खिलाड़ी का वापस आना हमेशा अच्छा होता है। बता दें कि हर्षित ने इंडिया वर्सेस इंग्लैंड वनडे सीरीज में तीन मैचों में कुल 6 विकेट झटके। अर्शदीप को एक मैच खेलने का मौका मिला। उन्होंने अहमदाबाद में दो शिकार किए। अनुभवी पेसर शमी ने दो मुकाबलों में दो विकेट लिए। वह आखिरी वनडे में भारतीय प्लेइंग का हिस्सा नहीं थे। भारत ने मंगलवार को अपने चैंपियंस ट्रॉफी के लिए 15 सदस्यीय स्क्वॉड में दो बदलाव किए। हर्षित के अलावा मिस्ट्री स्पिनर वरुण चक्रवर्ती की स्क्वॉड में एंट्री हुई है। उन्हें बल्लेबाज यशस्वी जायसवला की जगह शामिल किया गया।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए भारत का अपडेटेड स्क्वॉड रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल, हार्दिक पंड्या, अक्षर पटेल, वॉशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, ऋषभ पंत, हर्षित राणा, मोहम्मद शमी, अर्शदीप सिंह, वरुण चक्रवर्ती, रविंद्र जडेजा।

आरसीबी के नए कप्तान का ऐलान, रजत पाटीदार को मिली टीम की कमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। मार्च से शुरू होने वाले आईपीएल 2025 के लिए नए कप्तान के नाम की घोषणा कर दी गई है। आरसीबी ने नए कप्तान के नाम का ऐलान प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान किया और इस फ्रेंचाइजी ने टीम का कप्तान रजत पाटीदार को बनाया। माना जा रहा था कि कोहली और रजत पाटीदार में से किसी एक को टीम की कमान सौंपी जा सकती है। लेकिन भविष्य को देखते हुए फ्रेंचाइजी ने ये जिम्मेदारी रजत को सौंप दी है। रजत फाफ डुप्लेसिस के बाद टीम के कप्तान बने हैं। डुप्लेसिस साल 2022 से लेकर 2024 तक इस टीम के कप्तान थे जिन्हें आईपीएल 2025 की नीलामी से पहले रिलीज कर दिया गया था। रजत पाटीदार को आरसीबी ने इस सीजन के लिए 11 करोड़ रुपये में रिटने किया था। आरसीबी ने इस सीजन के लिए विराट कोहली, रजत पाटीदार और यश दयाल को रिटेन किया था। रजत के पास घरेलू स्तर पर कप्तानी करने का खासा अनुभव है और उन्होंने मध्य प्रदेश को एमएमएटी फाइनल में पहुंचाया था जहां वे मुंबई से पांच विकेट से हार गए थे। वह अजिंक्य रहाणे के बाद दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी भी थे जिन्होंने 10 मैचों में 61 की औसत और 186.08 की स्ट्राइक-रेट से 428 रन बनाए। रजत साल 2021 में आरसीबी का हिस्सा बने थे और उन्हें इस फ्रेंचाइजी ने 20 लाख रुपये में खरीदा था। इसके बाद साल 2022 में वो अनसोल्ड रहे थे, लेकिन इस साल वो आरसीबी में रिप्लेसमेंट के तौर पर जुड़े थे। रजत पाटीदार साल 2023 में फिर से आरसीबी का हिस्सा बने और उन्हें इस फ्रेंचाइजी ने 20 लाख में खरीदा था। वो इसी सैलरी पर साल 2024 में भी खेले थे, लेकिन साल 2025 के लिए उन्हें 11 करोड़ में इस टीम ने रिटेन किया।

इंग्लैंड टीम पर भड़के दिग्गज केविन पीटरसन, इस कारण अंग्रेजों को लताड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड टीम को भारत दौरे पर बहुत बुरी असफलता देखने को मिली। भारत के खिलाफ पहले पांच मैंचों की टी20 सीरीज में 4-1 से करारी शिकस्त झेलने का मिली। उसके बाद वनडे सीरीज भी उसे 3-0 से गंवानी पड़ी। इस दौरान अहमदाबाद वनडे में कमेंट्री के दौरान पूर्व भारतीय कोच रवि शास्त्री ने खुलासा किया कि इंग्लैंड के खिलाड़ियों ने पूरी सीरीज में केवल एक प्रैक्टिस सेशन में हिस्सा लिया। वहीं इंग्लैंड के पूर्व कप्तान और दिग्गज बल्लेबाज केविन पीटरसन को अपने देश की टीम का ये फैसला खंजर की तरह चुभ रहा है।

पीटरसन इंग्लिश टीम पर जमकर भड़के हैं। उन्होंने इंग्लिश खिलाड़ियों को प्रतिबद्धता की कमी पर आड़े हाथ लिया। पीटरसन ने डिज्नी+हॉटस्टार पर इंग्लैंड की हार के बाद कहा कि, रवि

शास्त्री और मैं ऊपर बात कर रहे थे कि इन लोगों ने कम से कम पिछले हफ्ते प्रैक्टिस तो की होगी। उन्होंने सिर्फ नागपुर मैच से एक दिन पहले एक प्रैक्टिस सेशन में हिस्सा लिया। उसके बाद से उन्होंने अभ्यास नहीं किया। केवल एक बल्लेबाज जो रूट ने नेट पर अभ्यास किया था। मुझे अफसोस है लेकिन आप उपमहाद्वीप में आकर वही गलतियां नहीं कर सकते। फिर तय करते हैं कि प्रैक्टिस नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि, कोई भी खिलाड़ी चाहे वह पुरुष हो या महिला, ऐसा नहीं है जो किसी सीरीज में जाने के बाद तय करे कि मैं प्रैक्टिस के बिना बेहतर हो जाऊंगा। मुझे बेहद अफसोस हो रहा। जब मैंने सुना कि इंग्लैंड ने पहले मैच के बाद से अभ्यास नहीं किया तो मैं पूरी तरह हैरान रह गया। पीटरसन ने निराशाजनक हार के बावजूद नेट सेशन में हिस्सा लेने के बजाय गोल्फ खेलने वाले इंग्लिश प्लेयर पर भी कटाक्ष किया। पूर्व कप्तान ने कहा कि, मैं समझता हूं, इसका आनंद लें। ये आपके जीवन का सबसे अच्छा समय है। गोल्फ खेलें, अपना समय सबसे अच्छे से बिताएं। इंग्लैंड के लिए खेलना वाकई बहुत मजेदार है। लेकिन सच में आपको रन बनाने के लिए पैसे मिलते हैं। आपको क्रिकेट मैच जीतने के लिए पैसे मिलते हैं। आपको गोल्फ खेलने के लिए पैसे नहीं मिलते। ये गोल्फ टूर नहीं ये क्रिकेट टूर है।

इंग्लैंड के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज में श्रेयस अय्यर का बेहतरीन प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज में विरोधी टीम का 3-0 से क्लीन स्वीप कर दिया औ इस पूरे सीरीज के दौरान टीम इंडिया के मध्यक्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर की बल्लेबाजी शानदार रही। भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज में विरोधी टीम का 3-0 से क्लीन स्वीप कर दिया और इस पूरे सीरीज के दौरान टीम इंडिया के मीडिल ऑर्डर के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर की बल्लेबाजी शानदार रही। श्रेयस अय्यर इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में हिस्सा लेने से पहले घरेलू क्रिकेट खेल रहे थे और वहां पर भी उन्होंने मुंबई के लिए शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने उस फॉर्म को इंग्लैंड के खिलाफ भी जारी रखा और इस टीम के खिलाफ जमकर कर बनाए।

श्रेयस इस वनडे सीरीज में ना सिर्फ भारत की तरफ से

बल्कि ओवरऑल भी सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में शुभमन गिल के बाद दूसरे नंबर पर रहे। गिल ने इस वनडे सीरीज में 60.33 की शानदार औसत के सात 181 रन बनाए और उनका स्ट्राइक रेट 123.12 का रहा। उन्होंने 3 मैचों में 2 अर्धशतकीय पारी खेली और उनका बेस्ट स्कोर 78 रन रहा। श्रेयस ने ना सिर्फ इस सीरीज में अच्छी बैटिंग की बल्कि उनकी फील्डिंग भी बेहतरीन रही। इंग्लैंड के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज के दौरान श्रेयस अय्यर ने बल्ले के साथ-साथ बेहतरीन फील्डिंग भी की और इसकी वजह से उन्हें बेस्ट फील्डर ऑफ द सीरीज का खिताब भी दिया गया। भारतीय ड्रेसिंग रूम में टीम के उप कप्तान शुभमन गिल ने उन्हें मेडल पहनाकर सम्मानित किया। तीसरे ममैच में भारत की जीत के बाद श्रेयस अय्यर ने कहा कि मैं इस सीरीज में शतक नहीं लगा पाया और इससे वो थोड़े निराश हुए। उन्होंने कहा कि काश मैं टीम के लिए शतक लगा पाता। श्रेयस अय्यर ने आगे कहा कि मुझे बीच में घरेलू क्रिकेट में खेलने का मौका मिला और इस दौरान मैंने अपने तकनीक पर काम किया। मैंने इस दौरान अपनी कमियों पर काम किया और इसका मुझे लाभ मिला। श्रेयस ने भारतीय ड्रेसिंग रूम के बारे में बात की और कहा कि ड्रेसिंग रूम इस वक्त एनर्जी से भरा हुआ है और मुझे लगता है कि टीम का हर खिलाड़ी शानदार फॉर्म में है।

मुझे लगता है कि ये सीरीज जीतना और चैंपियंस ट्रॉफी में इस लय को बनाए रखना शानदार होगा। एक यूनिट के रूप में हमने बेस्ट किया और सीरीज जीती। मुझे उम्मीद है कि इस वनडे सीरीज के लिए मुझे बेस्ट फील्डर का अवॉर्ड मिलेगा।

ज्योति किंडर गार्डन स्कूल में एक बच्चे के साथ हुए अमानवीय व्यवहार के मामले को मानवाधिकार आयोग ने लिया संज्ञान

स्कूल में बच्चे के साथ अमानवीयता की मानवाधिकार आयोग में शिकायत पर भाजपा नेता के बयान दर्ज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। ज्योति किंडर गार्डन स्कूल रीवा में एक बच्चे के साथ हुए अमानवीय व्यवहार के मामले को मानवाधिकार आयोग ने संज्ञान में लिया है। उक्त मामले को लेकर शिकायतकर्ता भाजपा नेता गौरव तिवारी को आज प्रकरण से जुड़े मामले में बयान दर्ज कराने पुलिस अधीक्षक कार्यालय बुलाया गया। जहां शिकायतकर्ता के बयान दर्ज किए गए। दरअसल बीते माह रीवा शहर में संचालित ज्योति किंडर गार्डन स्कूल में एक मासूम बच्चे के साथ किए गए अमानवीय व्यवहार की शिकायत भाजपा नेता गौरव तिवारी के द्वारा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग व बाल आयोग में की गई थी। भाजपा नेता का आरोप था कि स्कूल प्रबंधन द्वारा कड़कड़ाती ठंड के बीच बच्चे के साथ अमानवीय व्यवहार करते हुए उसके कपड़े उतरवाकर धुलवा दिए गए और फिर गीले कपड़ों में उसे बैठाकर रखा गया। भाजपा नेता के अपने बयान दर्ज कराने के बाद स्कूल प्रबंधन के खिलाफ कड़ी से कड़ी कारवाई करने की मांग की है।

रीवा में 5 साल के बच्चे से स्कूल में अभद्रता के मामले में राष्ट्रीय बाल आयोग और राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने दो सप्ताह पहले कलेक्टर प्रतिभा पाल को नोटिस जारी किया था। इस मामले में भाजपा नेता गौरव तिवारी मानव अधिकार आयोग में शिकायत करने वाले शिकायतकर्ता थे। जिन्हें गुरुवार को बयान दर्ज करवाने के लिए पुलिस ने बुलाया।

भाजपा नेता ने पूरे मामले में आज एसपी कार्यालय पहुंचकर अपना बयान दर्ज करवाया है। साथ ही स्कूल प्रबंधन पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। गौरव भाजपा युवा मोर्चा के राष्ट्रीय के राष्ट्रीय सचिव रह चुके हैं।

भाजपा नेता गौरव तिवारी ने बताया कि, मैंने आज पूरे मामले में अपने बयान दर्ज करवाए हैं। पुलिस ने मुझे बयान दर्ज करवाने के लिए बुलाया था। स्कूल प्रबंधन के इस कृत्य पर कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए

जानें पूरा मामला: रीवा में 5 साल के बीमार बच्चे ने क्लासरूम में टॉयलेट-लेट्रीन कर ली। क्लास ले रही टीचर ने बच्चे को बुरी तरह डांटा। वह और आया उसे खींचकर बाथरूम में ले गईं। वहां बच्चे की पेंट उतरवाकर उसी से टॉयलेट-लेट्रीन साफ कराया। करीब चार घंटे बिना पेंट खड़ा रखा। कड़कड़ाती ठंड में खड़ा बच्चा कांपता और सुबकता रहा। जब परिजनों को इस बात का पता चला तो उन्होंने स्कूल प्रबंधन से शिकायत की। लेकिन जब कोई कार्रवाई नहीं हुई तो उन्होंने लिखित शिकायत दी। इस पर मैनेजमेंट ने धमकाया कि आपको अपना बच्चा आगे पढ़ाना है या नहीं? इस घटना के बाद से बच्चा गुमसुम रहता है। किसी से बातचीत करने से कतराता है। रात में उठकर चिल्लाने लगता है। स्कूल जाने से भी मना कर रहा है। परेशान घर वालों ने जिला शिक्षा अधिकारी और कलेक्टर से मामले की शिकायत की है। कलेक्टर ने जांच की बात कही है।

स्कूल प्रशासन ने धमकाया: परिजन ने शिकायत की तो स्कूल मैनेजमेंट ने धमकाया। मां ने बताया कि बेटा क्लास रूम में था। अचानक उसका स्वास्थ्य खराब हो गया। क्लासरूम में टॉयलेट-लेट्रीन निकल गई। टीचर ने उसे डांटना शुरू कर दिया। वे उसे खींचते हुए वॉशरूम ले गईं। वहां टीचर और आया ने उसके कपड़े उतरवा दिए। एक पतला तौलिया उसके शरीर पर लपेट दिया। फिर बच्चे से ही कपड़े साफ कराए। बेटा ठंड और गलन के बीच सफाई करता रहा। पिता ने कहा कि हमने अगले दिन स्कूल प्रबंधन से मामले की मौखिक शिकायत की थी। इसके बावजूद उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की। जब इसकी लिखित शिकायत करने लगे तो स्कूल प्रबंधन ने धमकाना शुरू कर दिया।

स्कूल मैनेजमेंट के खिलाफ एबीवीपी किया था प्रदर्शन : बच्चे के पड़ोस में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का एक कार्यकर्ता रहता है। परिजन से बातचीत के दौरान उसको मामले का पता लगा। वह विद्यार्थी परिषद के अन्य कार्यकर्ताओं के साथ घटना के अगले दिन स्कूल पहुंचा था। मैनेजमेंट के खिलाफ प्रदर्शन किया। तुरंत कार्रवाई के आश्वासन पर प्रदर्शन खत्म किया गया, लेकिन जब कोई एक्शन नहीं हुआ तो कार्यकर्ता बुधवार को भी स्कूल पहुंच गए और नारे लगाए।

एबीवीपी जिला संयोजक पीएन पांडेय ने कहा, 'मासूम बच्चे को गीले जूते-मोजे पहनाकर एक पतले कपड़े से लपेट दिया गया। उसके कपड़े और बैग गलियारे में फेंक दिए गए। बच्चा ठंड में परेशान होता रहा। दोषियों पर कार्रवाई होनी चाहिए।'

शांति और सद्भाव के साथ सभी त्यौहार मनाएं

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार में जिला शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में महाशिवरात्रि, होली, ईद-उल फितर, रामनवमी, झूलेलाल जयंती, महावीर जयंती तथा अन्य पर्वों के आयोजन के संबंध में व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई। बैठक में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी ने कहा कि जिले की परंपरा के अनुसार सभी त्यौहार शांति और सद्भाव से मनाए जाएंगे। प्रशासन द्वारा सभी त्यौहारों के दौरान सुरक्षा, यातायात, साफ-सफाई, पेयजल व्यवस्था तथा अन्य सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएंगी। त्यौहार पूरे उल्लास और उत्साह से मनाएं। त्यौहार मनाते समय अनुशासन बनाए रखें। त्यौहारों की भी?भा? का लाभ उठाकर कई बार असामाजिक तत्व अव्यवस्थाएं पैदा करने का प्रयास करते हैं। इनसे क?ई से निपटा जाएगा। शोभा यात्रा, चल जुलूस तथा अन्य सभी ब? आयोजनों में सुरक्षा बल तैनात रहेंगे। इसके साथ-साथ आयोजक, प्रशासन और जनता को सहयोग देने के लिए अपने स्वयंसेवक भी परिचय पत्र देकर तैनात रखें। सबके सहयोग से व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएंगी। उन्होंने अपेक्षा की कि सभी त्योहार सौहार्द पूर्ण ढंग से शांतिपूर्वक भाई चारे की भावना के साथ मनाये जायेंगे।

अपर कलेक्टर ने कहा कि गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी होलिका दहन के लिए लक्ष्मणबाग संस्थान में निर्मित गौ काष्ठ नगर निगम के माध्यम से निर्धारित दर पर उपलब्ध कराई जाएगी। होलिका दहन करने वाली सभी संस्थाएं और समितियाँ नगर निगम में गौ काष्ठ की मात्रा की जानकारी उपलब्ध करा दें जिससे उन्हें समय पर गौ काष्ठ दी जा सके। इससे पर्यावरण की सुरक्षा होने के साथ-साथ गौसेवा भी होगी। विभिन्न त्यौहारों के दौरान नगर निगम प्रमुख मार्गों की साफ-सफाई कराएगा। नगर निगम द्वारा बिजली और पानी की भी समुचित व्यवस्था की जाएगी। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर ने कहा कि चल समारोहों, जुलूस तथा ब? आयोजनों की सूचना एसडीएम कार्यालय तथा पुलिस थाने को अवश्य दें। आवेदन में जुलूस के मार्ग, समय तथा उसमें शामिल होने वाले व्यक्तियों और वाहनों की अनुमानित संख्या का उल्लेख अवश्य करें। होलिका दहन करने वाली समितियाँ भी प्रशासन को सूचना अवश्य दें। त्यौहारों के दौरान सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों तथा नगर के प्रमुख सार्वजनिक स्थलों में सुरक्षा के उचित प्रबंध किए जाएंगे।

बैठक में संयुक्त कलेक्टर पी.के. पाण्डेय ने विभिन्न त्यौहारों के दौरान की जाने वाली प्रशासनिक व्यवस्थाओं की जानकारी दी। बैठक में उपस्थित शांति समिति के सदस्यों ने विभिन्न त्यौहारों के आयोजन के संबंध में महत्वपूर्ण सुझाव दिए। बैठक में एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, विधायक प्रतिनिधि भूपेन्द्र सिंह, शांति समिति के सभी सदस्य तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

कुंभ गया था परिवार, चोरों ने की 15 लाख की चोरी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कुंभ स्नान करने गए परिवार के घर चोरों ने कैश समेत 15 लाख रुपए कीमत की ज्वेलरी पार कर दी। पड़ोसी ने फोन पर घटना की जानकारी दी। घटना बांस गांव की है। बताया गया कि परिवार कुंभ यात्रा पर गया हुआ था। चोरों ने इसी बात का फायदा उठाकर गुरुवार को सूने घर का ताला चटका दिया।

आशीष घर लौट कर आए तो बताया कि बुधवार को मैं प%ी और बच्चों को लेकर कुंभ स्नान के लिए गया हुआ था। पड़ोसी ने फोन पर जानकारी दी की घर में चोरी की वारदात हो गई है। मैं इतना सुनकर घबरा गया। जब घर वापस लौटकर आया और देखा तो सारा सामान बिखरा पड़ा था।

10 तोला सोना समेत 10 किलो चांदी ले गए चोर: इसके साथ ही सोने चांदी के आभूषण समेत नकदी गायब थी। मेरे घर में करीब 15 लाख की चोरी हुई है। जिसमें 10 तोला सोना समेत 10 किलो चांदी,एक इंपोर्टेंट कैमरा, 5 हजार कैश समेत अन्य सामग्री शामिल है। उधर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। गढ़ थाना प्रभारी के मुताबिक सदेहियों से पूछताछ की जा रही है। जल्द आरोपी को गिरफ्तार कर लेंगे।

तेज रफ्तार कार ने स्कूटी को मारी टक्कर, बाजार से घर जा रहा शख्स उछलकर सड़क पर गिरा, मौके पर हुई मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मंगलवार की देर रात एक तेज रफ्तार कार ने स्कूटी को टक्कर मार दी, कार की रफ्तार इतनी तेज थी कि स्कूटी सवार हवा में उछलकर उछलने सड़क से जा टकराया। हादसे में उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने आरोपी कार चालक को पकड़ लिया है, पूछताछ की जा रही है।

जानकारी के अनुसार, रीवा के नेहरू नगर निवासी बृजेंद्र मिश्रा (55) मंगलवार रात को स्कूटी पर सवार होकर बाजार से अपने घर जा रहे थे। इस दौरान रात करीब 11 बजे चोरहटा के निर्मल सिटी के पास एक तेज रफ्तार कार ने उनकी स्कूटी को टक्कर मार दी।

कार की रफ्तार इतनी तेज थी कि बृजेंद्र मिश्रा हवा में उछलकर उछलने सड़क से जा टकराए, उसकी मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर के बाद कार भी डिवाइडर से टकरा गई।

स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दी, इसके बाद पुलिस ने तत्काल बृजेंद्र मिश्रा को अस्पताल भेजा, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद पुलिस ने कार चालक को पकड़ लिया। पूरी घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। जिसमें कार स्कूटी को टक्करमारती हुई नजर आ रही है। चोरहटा थाना प्रभारी आशीष मिश्रा ने बताया कि, कार को जब्त कर लिया गया है, कार कौन चला रहा था इसके संबंध में अभी विवेचना की जा रही है।

शासकीय अधिकारियों कर्मचारियों की ईमेल आईडी बनाये जाने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन स्तर से समस्त शासकीय अधिकारियों, कर्मचारियों के व्यक्तिगत नाम आधारित शासकीय ईमेल आईडी बनाये जाने के निर्देश दिये गये हैं। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने सभी शासकीय कार्यालय प्रमुखों को निर्देशित किया है कि भोपाल स्तर से नियुक्त नोडल अधिकारियों से संपर्क कर व्यक्तिगत नाम आधारित शासकीय मेल आईडी बनाया जाना सुनिश्चित करें। उक्त कार्य की कलेक्टर द्वारा आगामी टीएल बैठक में समीक्षा की जायेगी।

रोजगार मेले में 11 कंपनियों द्वारा किया जाएगा युवाओं का चयन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। स्थानीय शासकीय आईटीआई में 17 फरवरी को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक युवा संगम कार्यर्म आयोजित किया गया है। युवा संगम कार्यर्म के तहत आयोजित रोजगार मेले में जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में 11 कंपनियों एवं नियोजकों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों हेतु युवक एवं युवतियों की आयु सीमा 18 से 48 वर्ष के बीच निर्धारित की गई है। वेतन एवं भत्ते 5 हजार रुपए से 25 हजार रुपए तक निर्धारित किया गया है। वेतन एवं भत्ता तथा आयु सीमा विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग होगी।

युवाओ को अपने साथ मूल अंकसूची तथा निवास प्रमाण पत्र की छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आईडी, रोजगार कार्यालय का जीवित पंजीयन एवं नवीनतम दो पासपोर्ट साइज के फोटो लेकर आना अनिवार्य होगा। उप संचालक ने बताया कि रोजगार मेले में टाटा मोटर ऑटो मोबाइल कंपनी अहमदाबाद गुजरात, ख्याति शील्ड ग्लोबल रिच रायपुर छत्तीसग?, प्राकृतशील बॉयोटेक प्रा. लि. सवेरा होटल के पास सतना, यशस्वी ग्रुप भोपाल, बोनटन टेक्नोमेक फर्नीचर प्रा. लि. (आईसेक्ट) इंदौर, प्रगतिशील एग्रोटेक रीवा, प्रगतिशील बायोटेक रीवा, फूड प्रोड्क्टस उद्योग विहार चोरहटा, आर्मस ग्रुप, एलाइड रिसोर्स मैनेजमेंट सर्विसेज इंडिया, डीएमसी फिनिसिंग स्कूल प्राइवेट लिमिटेड पूणे तथा एचडीएफसी लाइफ इश्योरेन्स कंपनी लिमि. रीवा में रोजगार के अवसर उपलब्ध रहेंगे।

राष्ट्रीय न्यास लोकल लेवल कमेटी की हुई बैठक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अपर कलेक्टर श्रीमती स्थापना त्रिपाठी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय न्यास लोकल लेवल कमेटी की बैठक संपन्न हुई। बैठक में विधिक संरक्षण के प्राप्त 11 आवेदनों का अनुमोदन किया गया। जनसुनवाई में प्राप्त लीगल गार्जियनशिप के आवेदन को भी अनुमोदित करने की सर्वानुमति बैठक में रही।

कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में बताया गया कि राष्ट्रीय न्यास स्वास्थ्य निरामया योजनान्तर्गत 217 हितग्राहियों का बीमा किया गया तथा 50 विधिक संरक्षता के प्रमाण पत्र संबंधितों को वितरित किये गये। बैठक में सुझाव दिया गया कि बसों में दिव्यांगजनों को किराये में छूट के प्रावधान के साथ ही बसों में च?ने उतरने के लिये सुविधा की व्यवस्था सुनिश्चित कराई जाय। इस दौरान पूर्व में जारी किये गये विधिक संरक्षक की मृत्यु होने के कारण नये विधिक संरक्षक के अनुमोदन पर भी चर्चा की गई। बैठक में संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, सहायक संचालक महिला एवं बाल विकास आशीष दुबे रेडक्रास चेयरमैन रेडक्रास सोसायटी डॉ. प्रभाकर चतुर्वेदी, सचिव डॉ. विनोद श्रीवास्तव, डॉ. ए.के. खान सहित समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री ने संभाग स्तरीय बैठक में की समीक्षा

गर्भवती माताओं का शत-प्रतिशत पंजीयन हो, प्रतिमाह उन्हें स्वास्थ्य सुविधाएँ मिलें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि मातृ मृत्यु दर व शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के लिये स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास विभाग को समन्वित प्रयास करना होगा। ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य कार्यकर्ताएँ व आंगनवा?ी कार्यकर्ता गर्भवती महिलाओं का शत-प्रतिशत पंजीयन करें तथा प्रतिमाह उन्हें चिकित्सा सुविधा मुहैया कराई जाय। उप मुख्यमंत्री ने संभाग स्तरीय बैठक में स्वास्थ्य सूचकांक के अनुपात में रीवा संभाग में एएनसी पंजीयन व संस्थागत प्रसव सहित स्वास्थ्य सुविधाओं की विस्तार से समीक्षा की।

कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में उप मुख्यमंत्री एवं लोक स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि हमारे प्रदेश की मातृ मृत्यु दर व शिशु मृत्यु दर में देश में स्थिति ठीक नहीं है इसमें बहुत अधिक सुधार की आवश्यकता है। इसलिए आवश्यक है कि स्वास्थ्य विभाग का मैदानी अमला पूरी संवेदनशीलता के साथ घर-घर जाकर गर्भवती माताओं का शत-प्रतिशत पंजीयन करते हुए उन्हें प्रतिमाह व तिमाही में मिलने वाली स्वास्थ्य सुविधाएँ दें तथा उनकी जांच कराये ताकि वह महिलाएँ हाईरिस्क में न जा पाये। उन्होंने कहा कि हाईरिस्क में यदि गर्भवती महिला पहुंचती है तो उसको समय समय पर उपचार दिया जाय। तदुपरांत उसका संस्थागत प्रसव कराकर सुरक्षित किया जाय।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य के क्षेत्र में अधोसंरचना विकास के अनेक कार्य संचालित हैं। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अस्पताल भवनों के निर्माण के साथ ही पर्याप्त दवाइयों की उपलब्धता, डॉक्टर्स व पैरामेडिकल स्टाफ की नियुक्ति के कार्य प्राथमिकता से किये जा रहे हैं। जरूरत इस बात की है कि मैदानी अमला पूरी निष्ठा से कार्य करें तथा जिला एवं विकासखण्ड स्तरीय अधिकारी गंभीरता से मानीटरिंग करें व क्षेत्र का नियमित भ्रमण करें। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के तहत प्रतिमाह की 9 एवं 25 तारीख को दी जाने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं की मानीटरिंग की जाय ताकि इसका अधिक से अधिक आउटपुट निकले। उप मुख्यमंत्री ने अपेक्षा की कि गर्भवती महिलाओं के परिजनों को भी उसके स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिये जागरूक किया जाय जिससे जच्चा व बच्चा स्वस्थ्य रहे।

उप मुख्यमंत्री ने बैठक में कलेक्टर्स से अपेक्षा की कि वह क्षेत्र का भ्रमण कर स्वास्थ्य सुविधाओं की मानीटरिंग करें। क्लस्टर स्तर पर बैठकें आयोजित कर आने वाली कमियों को समन्वय व मानीटरिंग कर दूर करने का प्रयास करें। उन्होंने रीवा संभाग का व्हाट्सअप ग्रुप बनाकर स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रगति की नियमित जानकारी शेयर करने के भी निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री ने अपेक्षा की कि रीवा संभाग में समन्वित प्रयासों से शिशु मृत्यु दर व मातृ मृत्यु दर में कमी लाने में सफलता मिलेगी और इसकी लिये प्रतिमाह रिव्यू बैठक की जायेगी। रीवा संभाग के कमिश्नर श्री बीएस जामोद ने कहा कि क्लस्टर स्तर पर बैठकें कर स्वास्थ्य सुविधाओं की नियमित मानीटरिंग की जायेगी साथ ही मैदानी अमला पूरी तरह अपने कार्य में मुस्तैद रहे यह प्रयास पूर्णतः होंगे। हाईरिस्क में गर्भवती महिला न पहुंचे इसलिए उसका शत प्रतिशत पंजीयन कराकर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई जायेगी। उन्होंने आश्वस्त किया कि संभाग में हर स्तर पर समुचित ढंग से मानीटरिंग कर शिशु मृत्यु दर व मातृ मृत्यु दर में कमी लायी जायेगी। बैठक में कलेक्टर सतना डॉ. सतीश कुमार एसजी ने अपने सुझाव दिये। इस दौरान कलेक्टर मऊगंज अजय श्रीवास्तव, कलेक्टर मैहर रानी वाटड, सीईओ जिला पंचायत रीवा एवं सीधी उपस्थित रहे। कलेक्टर सिंगरौली व्हीसी के माध्यम से बैठक में जु?े। इस दौरान स्वास्थ्य तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के रीवा संभाग के जिलों के अधिकारी उपस्थित रहे।

खाद्य सुरक्षा की टीम ने लिए खाद्य पदार्थों के नमूने, जप्त किया सिलेंडर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महाकुंभ में तीर्थयात्रियों को उचित दर पर तथा शुद्ध सामग्री उपलब्ध कराने एवं ठहरने की व्यवस्था के संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने आदेश दिए हैं। इस संबंध में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों द्वारा खाद्य पदार्थों के नमूने लेकर होटलों पर लगातार कार्यवाही की जा रही है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी अम्बरीश दुबे ने बताया कि खाद्य सुरक्षा, नागरिक आपूर्ति निगम तथा मापतौल विभाग की संयुक्त टीम ने प?रा रीवा स्थित एकेएस होटल में जाँच की। होटल के किचन में शाकाहारी तथा मांसाहारी खाद्य पदार्थ एक ही फ्रिज में रखा पाया गया। इसे गंभीर अनियमितता मानते हुए होटल के संचालक आकाश सिंह के विरूद्ध खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज किया गया। होटल में अमानक नापतौल कांटा पाए जाने पर नापतौल निरीक्षक ने जप्त करने की कार्यवाही की। होटल नमः कोर्टयर्ड में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने पनीर, दही तथा अजवाइन के नमूने लिए। इनकी जाँच की जा रही है। यहाँ भी अप्रमाणित तौल कांटा पाए जाने पर उसे जप्त किया गया। कलेक्टर के निर्देश पर संयुक्त टीम ने होटल मार्तण्ड में पनीर, दही तथा मावा के नमूने लिए। इन नमूनों की जाँच की जा रही है। यहाँ भी तौल कांटे अमानक पाए जाने पर उसे जप्त करने की कार्यवाही की गई। टीम ने रीवा-प्रयागराज मार्ग में स्थित कई ढाबों में भी जाँच की। ऋषि मिश्रा ढाबा गंगातीरे में कोल्डड्रिंक्स अधिक दाम में बेचे जाने पर प्रकरण दर्ज किया गया।

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने ढाबे से दही, पनीर और नमकीन के नमूने लेकर जाँच के लिए भेजा। ढाबे में घरेलू रसोई गैस सिलेण्डर उपयोग करते पाए जाने पर प्रकरण दर्ज कर सिलेण्डर जप्त किया। होटलों और ढाबों को लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। संयुक्त टीम में खाद्य सुरक्षा अधिकारी अम्बरीश दुबे, साबिर अली, नापतौल सहायक नियंत्रक विजय खातरकर तथा नापतौल निरीक्षक सचिन सोनी शामिल रहे। टीम में सहायक आपूर्ति अधिकारी सुभाष द्विवेदी एवं अनमोल जैन भी शामिल रहे।

रेडक्रास समिति ने तीर्थयात्री के पार्थिव शरीर को पंहुचाया कर्नाटक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रयागराज महाकुंभ में शामिल होने के लिए दक्षिण भारत की तीर्थयात्री रीवा से होकर प्रयागराज पहुंच रहे हैं। कर्नाटक के बीदर जिले के तीर्थयात्रियों की कार 11 फरवरी को रायपुर कर्चुलियान के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस दुर्घटना में तीर्थयात्री संग शेट्टी का दुखद निधन हो गया। जिला रेडक्रास समिति ने एंबुलेंस उपलब्ध कराकर दिवंगत के घर 1050 किलोमीटर दूर पार्थिव शरीर को पहुंचाया। इस संबंध में रेडक्रास समिति के अध्यक्ष डॉ प्रभाकर चतुर्वेदी ने बताया कि पार्थिव शरीर को 24 घंटे की समय सीमा में पहुंचाने के लिए चालक सुनील सोंधिया और मनोज सोंधिया ने लगातार वाहन चलाया। उनके परिश्रम से तीर्थयात्री का पार्थिव शरीर कनार्टक पहुंच सका। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल तथा पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने दोनों चालकों को इसके लिए धन्यवाद ज्ञापित किया है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।